04 - आजाद भारत में स्त्री अस्मिता को कौन बचाएगा?

05 - लुप्त होता प्राकृतिक प्रकाश; बढ़ता प्रकाश प्रदूषण

A Daily News Magazine

इंदौर

बुधवार, 21 अगस्त, 2024

06 - सतपुड़ा टाइगर रिजर्व क्षेत्र से विस्थापित परिवारों की दुर्दशा

07- पुण्य श्लोक महारानी अहिल्याबाई होल्कर

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 296, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

सूखी नदी के ठिंगने पुल को पार कर
आटो रिक्शे से आती है बिटिया
राखी के दिन ।
मेरी कही – पानी वाले दिनों की कहानियों पर
नाती नतनिन हंसते हंसते अपनी नानी से कहते हैं ,
नाना जी इंगलिस मीडियम वालों को देसहा कहानी सुनाते हैं
ये झड़ी लगना क्या होता है .....
सूरज के दरसन नहीं मिलते रहे , क्या डे में भी नाइट होती रही ।
दाल चांव सिला जाते , रखे रखाये कपड़े बस्सा जाते
शक्कर पानी छोड़ देती रही बंद डिब्बे में ....
इसको ट्रांसलेट करो ना मम्मी ।
बिटिया भी टेढ़ा टेढ़ा मुस्कुरा देती – जब सुनती
तेरी बुआ राखी के दिन डोंगी चढ़ के आती थी ।
पतियाते नहीं अब बिटिया – बच्चे कि
कभी नदी ऊफनती बहती थी ।
सनसनाती बहती थी पूर की हवाएं .....
अरपा : सावन में भर भर पानी इतराती थी ।

– नवल शर्मा

प्रसंगवश

चंपाई सोरेन से झारखंड में क्या बीजेपी को फायदा होगा?

दिलनवाज़ पाशा

बीजेपी के साथ जाने की चर्चाओं के बीच झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और झारखंड मुक्ति मोर्चा के वरिष्ठ नेता चंपाई सोरेन ने कहा है कि वो तीन विकल्पों पर विचार कर रहे हैं- राजनीति से संन्यास, नई पार्टी शुरू करना या किसी भरोसेमंद दल के साथ जाना। 31 जनवरी 2024 को हेमंत सोरेन के जेल जाने के बाद चंपाई सोरेन ने मुख्यमंत्री पद संभाला था।

'कोल्हान के टाइगर' कहे जाने वाले चंपाई को हेमंत सोरेन को ज़मानत मिलने के बाद पार्टी के कहने पर पद छोड़ना पड़ा था। तीन जुलाई 2024 को उन्होंने इस्तीफ़ा दे दिया था। पिछले तीन दिनों से कयास लगाए जा रहे थे कि चंपाई सोरेन बीजेपी में शामिल हो सकते हैं।

वो किसके साथ जा रहे हैं या नहीं, ये अगले कुछ दिनों में साफ़ हो जाएगा लेकिन रविवार को आए उनके इस बयान से ये स्पष्ट हो गया है कि जेएमएम के साथ नहीं रहेंगे।

झारखंड के कोल्हान क्षेत्र से आने वाले संथाल आदिवासी नेता चंपाई सोरेन की छवि बेदाग रही है और उन्हें राज्य के शीर्ष आदिवासी नेताओं में शुमार किया जाता है। उनके बीजेपी के साथ आने के सवाल पर झारखंड में बीजेपी के वरिष्ठ नेता और विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष अमर कुमार बाउरी कहते हैं, 'चंपाई एक बड़े नेता हैं। उन्हें पार्टी में शामिल करने का निर्णय केंद्रीय नेतृत्व को करना है। उनके आने से बीजेपी को फ़ायदा होगा या नहीं, इस सवाल का जवाब तब ही दिया जा सकेगा जब वो पार्टी में शामिल हो जाएंगे।'

'वहीं बीजेपी के प्रवक्ता प्रतुल शाहदेव कहते हैं, अगर वो बीजेपी में आना चाहेंगे तो हमारा केंद्रीय और राज्य नेतृत्व इस पर निर्णय लेगा। लेकिन उनके इस बयान से जेएमएम की अंदरूनी राजनीति सामने आ गई है, ये स्पष्ट हो गया है कि सोरेन परिवार किसी और को बर्दाश्त नहीं करता है, भले ही वो राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री ही क्यों ना हों।'

'हालांकि, झारखंड मुक्ति मोर्चा चंपाई के जाने को नैतिक नुकसान के रूप में तो देख रहा है, लेकिन राजनीतिक नुक़सान को खारिज कर रहा है। जेएमएम के विधायक सुदिव्य सोनू कहते हैं, उनका जाना वैचारिक रूप से जेएमएम को खलेगा लेकिन अगर इसे राजनीतिक रूप से देखें तो कोल्हान क्षेत्र में जेएमएम को कोई नुक़सान नहीं होने जा रहा है।'

झारखंड के निवर्तमान मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को कथित ज़मीन घोटाले के आरोप में जेल जाना पड़ा था। जेल जाने से पहले उन्होंने इस्तीफ़ा दिया था और उनकी जगह चंपाई सोरेन मुख्यमंत्री बने थे। हेमंत सोरेन अब जेल से बाहर हैं और फिर से मुख्यमंत्री हैं। झारखंड विधानसभा चुनाव में अब लंबा समय नहीं है।

विश्लेषक ये मान रहे हैं कि मौजूदा समय में हेमंत सोरेन आदिवासी मतदाताओं को अपने पीछे मज़बूती से खड़ा करने में कामयाब हो रहे हैं। हालांकि, हाल ही में हुए लोकसभा चुनावों में बीजेपी 14 में से 8 सीटें जीतने में कामयाब रही है। 2019 में बीजेपी ने 12 सीटें जीतीं थीं। बीजेपी लोकसभा में अब भी झारखंड की सबसे बड़ी पार्टी है।

हेमंत सोरेन ने बार-बार ये कहा है कि भारतीय जनता पार्टी को झारखंड में आदिवासी नेतृत्व बर्दाश्त नहीं हुआ और एक आदिवासी नेता को फंसाकर जेल भेजा गया। राजनीतिक विश्लेषक ये मान रहे हैं कि हेमंत आगामी चुनावों में जनभावना का फ़ायदा उठा सकते हैं और ऐसे में चंपाई सोरेन के जाने का पार्टी पर बहुत असर नहीं होगा।

नेशनल इलेक्शन वॉच के झारखंड कोऑर्डिनेटर और राजनीतिक विश्लेषक सुधीर पाल कहते हैं, हेमंत सोरेन आदिवासी मतदाताओं को भावनात्मक रूप से जोड़ने में कामयाब रहे हैं। झारखंड में 81 विधानसभा सीटें हैं, जिनमें से 28 सीटें आदिवासियों के लिए सुरक्षित हैं। पिछले चुनाव में इन 28 में से 26 सीटों पर जेएमएम और कांग्रेस के गठबंधन ने जीत हासिल की थी। चंपाई सोरेन का आठ विधानसभा सीटों वाले इस इलाक़े पर गहरा प्रभाव रहा है। ये माना जा रहा है कि चंपाई सोरेन कोल्हान और उसके आसपास की सीटों को प्रभावित कर पाएंगे।

चंपाई सोरेन के आने से बीजेपी की अंदरूनी राजनीति भी प्रभावित हो सकती है। चंपाई सोरेन के आने से बीजेपी में भी मुख्यमंत्री पद के कई दावेदार हो जाएंगे। सवाल ये है बीजेपी में जाते हैं तो चंपाई को क्या मिलेगा। विश्लेषक मान रहे हैं कि उन्हें मुख्यमंत्री पद का चेहरा भी बनाया जा सकता है।

चंपाई सोरेन ने अपने बयान में कहा है कि जब उनसे सीएम पद से हटने के लिए कहा गया तो वो ज़हर का घूंट पीकर रह गए। सुधीर पाल कहते हैं, 'निश्चित तौर पर उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुंची। हालांकि राजनीति में नेताओं की अंतरआत्मा को ठेस तब पहुँचती है, जब कुछ विकल्प खुल जाते हैं। चंपाई के लिए विकल्प खुले तब ही उन्होंने इस तरह का बयान दिया है। चंपाई सोरेन झारखंड में राजनीतिक रूप से असरदार संथाल जनजाति के बड़े नेता हैं। सुधीर पाल कहते हैं, 'संथाल जनजाति का कोई बड़ा लीडर बीजेपी के पास नहीं था। इनके जाने से संथाल नेता लोबिन हेम्ब्रम भी इनके साथ जाएंगे। ऐसे में दो बड़े नेता बीजेपी के पास होंगे।' सुधीर पाल कहते हैं, 'बीजेपी के पास बाबूलाल मरांडी ज़रूर हैं लेकिन आज की तारीख़ में वो ना तो आदिवासी और ना ही ग़ैर आदिवासी इलाक़ों में प्रभावी हैं।' जेएमएम विधायक सुदिव्य सोनू कहते हैं जितने भी नेता पार्टी छोड़कर गया कोई भी अपनी जगह नहीं बना पाया। स्थानीय पत्रकार आनंद दत्त कहते हैं, 'चंपाई सोरेन अगर अपनी पार्टी बनाते हैं और बीजेपी के साथ चुनाव लड़ते हैं तो इसका थोड़ा बहुत फ़ायदा बीजेपी को हो सकता है। अगर ऐसा होता है, चंपाई एसटी आरक्षित सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारेंगे, भले ही वो उम्मीदवार जीते या न जीते, लेकिन उन सीटों पर जेएमएम को एसटी वोट का नुकसान ज़रूर होगा। चार से पांच सीट भी अगर जेएमएम के हाथ से निकलती है, तो यही स्थिति बीजेपी के लिए मुफ़ीद होगी।'

(बीबीसी हिन्दी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

सुप्रीम कोर्ट ने ममता सरकार को दिखाया 'आईना'

● जमकर लगाई फटकार, कहा-अब देश दूसरे रेप का इंतजार नहीं कर सकता ● नेशनल टास्क फोर्स का किया गठन, अस्पताल और पुलिस को लगाई लताड़ ● सीजेआई ने सुनवाई के दौरान सीबीआई से मांगी 22 अगस्त तक स्टेटस रिपोर्ट

कोलकाता रेप मर्डर केस

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोलकाता में महिला डॉक्टर के साथ हुए रेप और मर्डर पर आज सुप्रीम कोर्ट ने ममता सरकार को खूब सुनाया। सीजेआई की अगुवाई वाली तीन सदस्यीय बेंच ने राज्य सरकार का पक्ष रख रहे कपिल सिब्बल का सामने सवालों की बौछार कर दी। कोर्ट ने कड़े शब्दों में पूछा कि बॉडी आठ बजे रात को पैरेंट्स को दी गई और उसके बाद 11 बजकर 45 मिनट पर केस दर्ज क्यों हुआ। कोर्ट ने आगे पूछा कि क्या शुरुआत में मर्डर केस दर्ज नहीं किया गया। कॉलेज के प्रिंसिपल उस समय क्या कर रहे थे। उन्होंने ऐक्शन क्यों नहीं लिया। हैरानी की बात रही कि ज्यादातर सवालों को लेकर सिब्बल के पास भी जवाब नहीं था। कोर्ट ने इसके साथ एक नेशनल टास्क फोर्स का गठन किया है जिसकी अंतरिम रिपोर्ट तीन हफ्ते में देनी होगी। इसके अलावा सुप्रीम कोर्ट ने सीबीआई से 22 अगस्त को स्टेटस रिपोर्ट सौंपने को कहा है। सुप्रीम कोर्ट ने टास्क फोर्स को भी डेडलाइन दी गई है। सीजेआई के नेतृत्व में जारी निर्देशों के अनुसार, टास्क फोर्स को तीन हफ्ते में अंतरिम रिपोर्ट देनी होगी। उसके बाद दो महीने में फाइनल

रिपोर्ट देनी होगी। सीजेआई ने कहा कि राज्य सरकार यानी ममता सरकार को भी अस्पताल में तोड़फोड़ के बारे में स्टेटस रिपोर्ट पेश करनी होगी। इस मामले पर अगली सुनवाई 22 अगस्त यानी गुरुवार को होगी।

महिला डॉक्टर की फोटो वायरल करने पर सीजेआई का सवाल

कोलकाता डॉक्टर केस मामले में पीड़िता का फोटो उजागर करने पर चिंता जाहिर की। सीजेआई डी वाई चंद्रचूड़ ने सख्त लहजे में कहा कि जिस विक्टिम के साथ घटना हुई उसके नाम और फोटो प्रकाशित और प्रसारित किए जाने पर गंभीर चिंता जताई। कानून और जजमेंट में में कहा गया है कि नाम उजागर ना हो लेकिन फिर भी किया गया, यह गंभीर चिंता का विषय है। सीजेआई ने कहा कि एक यंग डॉक्टर का जीवन खत्म हो गया और फिर उसका नाम और फोटो सर्कुलेट हुआ। सीजेआई की अगुवाई में तीन सदस्यीय बेंच ने इस जघन्य वारदात के बाद डॉक्टरों की सुरक्षा पर चिंता जताई है। सीजेआई ने अस्पताल में महिला डॉक्टर की सुरक्षा पर चिंता जताई।

रेप विक्टिम पर हाईकोर्ट की टिप्पणी सुप्रीम कोर्ट में खारिज

नई दिल्ली/कोलकाता (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को नाबालिग से रेप के आरोपी की सजा बहाल कर दी। साथ ही कलकत्ता हाईकोर्ट की उस टिप्पणी को भी खारिज कर दिया, जिसमें कहा गया था कि किशोरियों को अपनी यौन इच्छाओं पर काबू रखना चाहिए। वे दो मिनट के सुख के लिए समाज की नजरों में गिर जाती हैं। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस अभय एस ओका और जस्टिस उज्ज्वल भुइयां की बेंच ने कहा- निचली अदालतों को फैसला कैसे लिखना चाहिए, इसे लेकर भी हम निर्देश जारी कर रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट के कमेंट को आपत्तिजनक बताया था। कलकत्ता हाईकोर्ट के जस्टिस चितरंजन दास और जस्टिस पार्थ सारथी सेन की बेंच ने 18 अक्टूबर 2023 को रेप केस की सुनवाई की थी। बेंच ने लड़के को नाबालिग गर्लफ्रेंड से यौन उत्पीड़न मामले में बरी कर दिया था। दोनों टीनएजर्स के बीच अफेयर था और उन्होंने सहमति से संबंध बनाए थे। डिस्ट्रिक्ट कोर्ट ने लड़के को पॉक्सो एक्ट के तहत दोषी ठहराते हुए 20 साल जेल की सजा सुनाई थी। इस फैसले के खिलाफ वह हाईकोर्ट पहुंचा था। हाईकोर्ट ने लड़के को नसीहत दी थी- किशोरों को युवतियों, महिलाओं की गरिमा और शारीरिक स्वायत्तता का सम्मान करना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने पिछले साल 8 दिसंबर को कलकत्ता फैसले की आलोचना की थी। शीर्ष अदालत ने हाईकोर्ट की टिप्पणियों को घोर आपत्तिजनक और पूरी तरह से गलत करार दिया था। सुप्रीम कोर्ट ने फैसले को टीनएजर्स के आर्टिकल 21 के अधिकारों का उल्लंघन बताया था।

एचसी ने कहा था-

लड़कियां अपनी यौन इच्छाओं पर काबू रखें, दुष्कर्म के आरोपी की सजा बहाल

ठाणे में बच्चियों से स्कूल में यौन-शोषण, पुलिस पर पथराव

भीड़ ने स्कूल में तोड़फोड़ की, ट्रेनें रोकीं, आरोपी गिरफ्तार, सरकार ने एसआईटी बनाई

मुंबई (एजेंसी)। कोलकाता में ट्रेनी डॉक्टर से रेप-मर्डर के बीच ठाणे के बदलापुर में दो बच्चियों से स्कूल में यौन-शोषण का मामला सामने आया है। घटना की जानकारी सामने आने के बाद गुस्साई भीड़ और पुलिस के बीच मंगलवार को झड़प हुई। भीड़ ने पहले स्कूल में तोड़फोड़ की उसके बाद बदलापुर रेलवे स्टेशन पर ट्रेनें रोकीं। पुलिस ने भीड़ को रोकने के लिए आंसू

गैस के गोले दागे, जिसके बाद लोगों ने पथराव शुरू कर दिया। घटना में दर्जनों लोग घायल हुए हैं। 23 साल के आरोपी ने 16 अगस्त को स्कूल के बाथरूम में बच्चियों के साथ यौन-शोषण किया था। बच्चियों के पेरेंट्स ने एक दिन बाद एफआईआर दर्ज करवाई। पुलिस ने आरोपी अक्षय शिंदे को पॉक्सो एक्ट के तहत केस दर्ज कर गिरफ्तार कर लिया है।

एसआईटी करेगी बदलापुर सेक्स स्कैंडल की जांच

महाराष्ट्र सरकार ने ठाणे जिले के बदलापुर स्थित एक स्कूल की दो छात्राओं के कथित यौन उत्पीड़न मामले की जांच के लिए मंगलवार को विशेष जांच दल (एसआईटी) गठित करने का आदेश दिया। राज्य सरकार ने पूरे प्रकरण की जांच के लिए महानिरीक्षक आरती सिंह के नेतृत्व में एसआईटी की घोषणा की है।

मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में वंदे मातरम् के गान के साथ हुई मंत्रिपरिषद की बैठक

धूमधाम से मनेगी श्रीकृष्ण जन्माष्टमी : सीएम डॉ. यादव

- मंत्रीगण, प्रभार के जिलों में भ्रमण के दौरान रात्रि विश्राम अवश्य करें
- निकायों में अविश्वास प्रस्ताव के लिए तीन चौथाई बहुमत जरूरी
- संवैधानिक प्रावधानों का उल्लंघन करने वाले मदरसों के शासकीय अनुदान बंद होंगे

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद की बैठक वंदे-मातरम् के गान के साथ आरंभ हुई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बैठक से पहले अपने संबोधन में कहा है कि मंत्रीगण अपने प्रभार के जिलों में भ्रमण के दौरान एक माह में कम से कम एक बार रात्रि विश्राम अवश्य करें। उन्होंने कहा कि कि मदरसों में अन्य धर्म की शिक्षा पर प्रतिबंध के संबंध में स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा निर्देश जारी किए गए हैं। संविधान के अनुच्छेद 28 (3) के प्रावधान के अनुसार मदरसों में अध्ययनरत बच्चों को उनके धर्म की शिक्षा के विपरीत अन्य धर्म की शिक्षा ग्रहण करने अथवा उपासना में उपस्थित होने को बाध्य करने वाले मदरसों के सभी शासकीय अनुदान बंद किए जाएंगे। ऐसे मदरसों की मान्यता समाप्त करने की विधिवत कार्यवाही सहित अन्य उपयुक्त वैधानिक कार्यवाही भी सुनिश्चित की जाएगी।

ई.ओ.डब्ल्यू और लोकायुक्त की इकाइयां बढ़ेंगी– मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि युवा, किसान, महिला और गरीब के महत्व को रेखांकित करते हुए राज्य शासन चार मिशन आरंभ कर रहा है। इस संबंध में विचार-विमर्श के लिए शीघ्र ही मंथन कार्यक्रम किया जाएगा, जिसमें सभी मंत्रीगण शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार के खिलाफ तंत्र को मजबूत करने के लिए प्रदेश में ई.ओ.डब्ल्यू और लोकायुक्त की इकाइयों को बढ़ाया जाएगा।

दुनिया में मंकीपॉक्स का नया संकट, देश में अलर्ट

● सीमा और एयरपोर्ट्स पर बढ़ाई निगरानी, फिलहाल कोई केस नहीं ● नोडल ऑफीसर्स नियुक्त, आइसोलेशन वॉर्ड तैयार करने के निर्देश

नई दिल्ली (एजेंसी)। दुनिया के कुछ देशों में मंकीपॉक्स का नया खतरा मंडराने लगा है। भारत फिलहाल इस नए संक्रामक रोग से पूरी तरह अछूता है, लेकिन अन्य देशों में मिल रहे मरीजों के मद्देनजर सतर्कता बढ़ाई जा रही है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा है कि भारत में फिलहाल मंकीपॉक्स का कोई मामला सामने नहीं आया है, हालांकि इस बीमारी को फैलने से रोकने और नियंत्रित करने के लिए सभी जरूरी कदम उठाए जा रहे हैं। केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव अपूर्व चंद्रा ने कहा कि मंत्रालय ने टेस्टिंग सुविधा से लेकर नोडल ऑफीसर्स

नियुक्त किए हैं। एयरपोर्ट पर भी निगरानी बढ़ाने को कहा गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने 2022 में पहली बार ग्लोबल पब्लिक हेल्थ इमरजेंसी की घोषणा की थी। तब से पिछले साल मई तक भारत में कुल 30 मामले पाए गए थे और एक व्यक्ति की इस बीमारी से मौत हुई थी। हालांकि 2022 और अब के वायरस में अंतर है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 36.3 °c | न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ बुधवार, 21 अगस्त 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

झारखंड में 'स्पेशल 28' से बीजेपी करेगी 'खेला'

● चंपाई सोरेन प्रकरण के बाद हेमंत सोरेन पर होगा 'मिशन आदिवासी' अटैक ● 28 सीटों पर आदिवासी नेताओं को ही प्रत्याशी बनाने की तैयारी में बीजेपी

दुमका (एजेंसी)। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री चांपई सोरेन के बगावती सुर अपनाने की मुश्किल से अभी सीएम हेमंत सोरेन ठीक से उबर भी नहीं सके हैं कि बीजेपी उनके लिए नई मुश्किल खड़ी करने में जुट गई है। इसी साल होने वाले झारखंड विधानसभा चुनाव को देखते हुए राज्य की आदिवासी बाहुल्य विधानसभा सीटों को लेकर बीजेपी ने खास तैयारी की है। बीजेपी झारखंड की 28 आदिवासी बाहुल्य सीटों पर जीत सुनिश्चित करने के लिए अभी से तैयारी में जुट गई है। माना जा रहा है कि चांपई सोरेन को जेएमएम से अलग करने के पीछे का मकसद भी इसी कड़ी का हिस्सा रहा है। हालांकि चांपई सोरेन को लेकर बीजेपी ने अभी कोई कंक्रीट बात सामने नहीं रखी है। बीजेपी के रणनीतिकारों ने झारखंड 28 आदिवासी बाहुल्य सीटों में करीब आधे पर जीत दर्ज करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। बीजेपी संताल परगना और कोल्हान प्रमंडल की सीटों को लेकर विशेष तैयारी कर रही है। चुनावी तैयारियों को लेकर बीजेपी के चुनाव प्रभारी लक्ष्मीकांत वाजपेयी, विधानसभा चुनाव के प्रभारी और केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान, सह प्रभारी और असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा लगातार पार्टी के आदिवासी नेताओं से बातचीत कर रहे हैं। बीजेपी के सूत्रों ने बताया कि शिवराज सिंह चौहान, हिमंत बिस्वा सरमा, लक्ष्मीकांत वाजपेयी सरीखे नेता झारखंड बीजेपी के तमाम आदिवासी नेताओं से संपर्क में हैं। इस संवाद के जरिए बीजेपी यह समझने की कोशिश में कि आदिवासी वोटरों का मूड क्या है। उनकी डिमांड क्या है। वह अपने इलाके के किन नेताओं को तवज्जो दे रहे हैं। साथ ही यह भी पता लगाने की कोशिश की जा रही है कि आदिवासी वोटर अपने बीच बीजेपी के किन नेताओं को देखना और सुनना चाहते हैं। इन तमाम बातों की रिपोर्ट जोर शोर से तैयार किए जा रहे हैं। झारखंड विधानसभा चुनाव को लेकर बीजेपी की प्लानिंग का हिस्सा है कि वह आदिवासी बाहुल्य सीटों पर सबसे पहले कैंडीडेट घोषित कर दें। पार्टी का मानना है कि पहले कैंडीडेट की घोषणा होने से वोटरों को अपना मन बनाने का पर्याप्त वक्त मिलेगा। इसके अलावा बीजेपी इस प्रयास में भी है कि आदिवासी बाहुल्य सीटों के लिए इसी समाज से आने वाले स्थानीय नेताओं को प्रत्याशी बनाया जाए। कई प्रत्याशियों के नाम सामने आने लगे हैं।

इजरायल के खिलाफ ईरान अब कर रहा है माइंड गेम

इजरायल पर हमला ना करने के पीछे खास रणनीति

दिमाग से खेल रहे अयातुल्ला खुमैनी,इजरायल परेशान

तेहरान (एजेंसी)। ईरान की राजधानी तेहरान में 31 जुलाई को हमास नेता इस्माइल हानिया की हत्या के बाद से पश्चिम एशिया में युद्ध के बादल मंडरा रहे हैं। तमाम विशेषज्ञों ने हानिया की मौत के बाद ईरान की ओर से इजरायल पर हमले की भविष्यवाणी की थी। हालांकि बीते 20 दिन में हमले की भविष्यवाणियां सच साबित नहीं हुई हैं। भले ही हानिया की मौत के बाद से अब तक शांति है लेकिन मनोवैज्ञानिक स्तर पर दोनों देशों, खासतौर से इजरायल के नागरिकों के लिए बीते तीन हफ्ते काफी कष्टकारी रहे हैं। ईरान लगातार हानिया की हत्या के लिए इजराइल से बदला लेने की कसम खा रहा है, जिससे टेंशन बरकरार है। इसे ईरान के माइंड गेम की तरह देखा जा रहा है। ईरान इंटरनेशनल की रिपोर्ट के मुताबिक, इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (आईआरजीसी) के डिप्टी कमांडर अली फदावी ने सोमवार को कहा कि ईरान के डर से इजरायल में हंगामा है।

एमईआईएल ने तैनात किया अत्याधुनिक ऑयल ड्रिलिंग रिग

भोपाल। हैदराबाद की मेघा इंजीनियरिंग एंड इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड ने आंध्र प्रदेश के राजमुंदरी में ओएनजीसी प्लांट में स्वचालित और हाइड्रोलिक 2000 एचपी क्षमता वाली ऑयल ड्रिलिंग रिग लगाई है। इससे पहले एमईआईएल ने इसी प्रोजेक्ट में 2000 एचपी क्षमता वाली दो लैंड ड्रिलिंग रिग लगा चुकी हैं। यह ओएनजीसी की राजमुंदरी के प्लांट लगाई गई तीसरी रिग है।

एंडवास तकनीकी वाली ऑयल ड्रिलिंग रिग 2000 एचपी की क्षमता के साथ अपने कामकाज में अद्वितीय है और उच्च दबाव और तापमान में 6000 मीटर तक ड्रिलिंग कर सकती है। यह रिग सुरक्षा और रखरखाव के कारण डाउनटाइम को कम करने के लिए पूर्ण स्वचालन के साथ बनाया गया है।

तेल ड्रिलिंग रिग की तैनाती के उद्घाटन समारोह में एमईआईएल और ड्रिलमेक के प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिनमें मनोज वर्मा, वीपी कॉन्ट्रैक्ट्स, मार्को टोज़ी, डिप्टी सीईओ (ड्रिलमेक), श्री मिशेल ब्रूज़ी, सीओओ (ड्रिलमेक), साबिर हुसैन वीपी इंस्टॉलेशन एंड कमीशनिंग (ड्रिलमेक) और ओएनजीसी के अधिकारी शामिल थे।नई पीढ़ी की पूरी तरह से स्वचालित तेल ड्रिलिंग 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' पहल के तहत की गई है।

यूपीएससी में लेटरल एंट्री से नियुक्ति का आदेश रद्द

मंत्री बोले-विज्ञापन रद्द करें, चेयरमैन को लिखी चिट्ठी

आरक्षण पर भारी विवाद के बाद मोदी सरकार हटी पीछे

नई दिल्ली (एजेंसी)। यूपीएससी ने 17 अगस्त को लेटरल एंट्री भर्ती के लिए 45 पोस्ट पर वैकेंसी निकाली थी। इसे अब रद्द कर दिया गया है। केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने यूपीएससी चेयरमैन को नोटिफिकेशन रद्द करने को कहा। पीएम मोदी के कहने पर यह फैसला बदला गया है। इस वैकेंसी का राहुल गांधी ने भी विरोध किया था। राहुल ने कहा था- लेटरल एंट्री के जरिए खुलेआम एससी-एसटी और ओबीसी वर्ग का हक छीना जा रहा है।

मोदी सरकार आरएसएस वालों की लोकसेवकों में भर्ती कर रही है। राहुल गांधी को जवाब देते हुए कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि पूर्व पीएम मनमोहन सिंह को लेटरल एंट्री के जरिए ही 1976 में फाइनेंस सेक्रेटरी, मोंटेक सिंह अहलूवालिया को योजना आयोग का उपाध्यक्ष और सोनिया गांधी को नेशनल एडवाइजरी काउंसिल चीफ बनाया गया। कांग्रेस ने लेटरल एंट्री की शुरुआत की थी। अब पीएम मोदी ने यूपीएससी को नियम बनाने का अधिकार देकर लेटरल एंट्री सिस्टम को व्यवस्थित बनाया है। पहले की सरकारों में लेटरल एंट्री फॉर्मल सिस्टम नहीं था। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी का मानना है कि सार्वजनिक नौकरियों में सामाजिक न्याय सरकार के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता होनी चाहिए। इस आरक्षण का उद्देश्य इतिहास में हुए अन्याय का उन्मूलन और समाज में समावेश और समरसता को बढ़ावा देना है। मंत्री ने यह भी कहा कि लेटरल एंट्री वाले पदों को विशेषज्ञता वाला माना जाता है।

पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह कोरोना पॉजीटिव, डॉक्टरों ने कहा- पांच दिन आराम करें

भोपाल (नप्र)। पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह को कोराना हो गया है। उन्होंने इस बात की जानकारी सोशल मीडिया पर दी है। इससे पहले दिग्विजय सिंह जनवरी और अप्रैल 2021 में कोरोना पॉजिटिव हो चुके हैं।

एक्स पर अपनी पोस्ट पर उन्होंने कहा- मेरा कोविड टेस्ट पॉजिटिव आया है। मुझे 5 दिनों के लिए आराम करने के लिये कहा गया है। इसलिए मैं कुछ समय के लिए नहीं मिल पाऊँगा। क्षमा करें। आप सभी भी कोविड से बचने के लिए अपना ख्याल रखें।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने रीवा में आईटी पार्क और रीजनल इंडस्ट्री कॉनक्लेव की समीक्षा की

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमन्त्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने मंत्रालय में रीवा में प्रस्तावित आईटी पार्क और रीजनल इंडस्ट्री कॉनक्लेव की तैयारियों की समीक्षा की। उन्होंने आईटी पार्क के लिए प्रस्तावित स्थल, विभिन्न प्रावधानों, सुविधाओं की समीक्षा कर निर्देश दिये कि आईटी पार्क में अत्याधुनिक सुविधाओं को शामिल किया जाये। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने रीवा में प्रस्तावित रीजनल इंडस्ट्री कॉनक्लेव की तैयारियों की जानकारी भी प्राप्त की। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि रीजनल इंडस्ट्री कॉनक्लेव को सफल बनाकर क्षेत्र में औद्योगिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए समेकित प्रयास किए जायें। उपलब्ध आधारभूत संरचनाओं का बेहतर उपयोग सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक प्रावधानों को भी योजना में शामिल किया जाये। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने मल्टी-परपज़ आईटी पार्क गुढ़ और सोलर पार्क के लिए आवश्यक आधारभूत आवश्यकताओं के लिए निर्देश दिये। बैठक में एमडी एमपीआईडीसी श्री चन्द्रमौली शुक्ला सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

ब्लड सैंपल बदलने वाले 2 आरोपी अरेस्ट, पुलिस ने अब तक 9 लोगों को गिरफ्तार किया

पुणे (एजेंसी)। पुणे पोर्श एक्सीडेंट केस में पुणे क्राइम ब्रांच ने सोमवार की रात 2 लोगों को गिरफ्तार किया। पुलिस कमिश्नर अमितेश कुमार के अनुसार, दोनों ने घटना के दिन कार में मौजूद नाबालिग आरोपी के दोस्तों का ब्लड सैंपल बदलवाया था। दोनों आरोपियों की मंगलवार को कोर्ट में पेशी भी हुई। पुणे के कल्याणी नगर इलाके में 18 मई की रात 17 साल 8 महीने के एक लड़के ने आईटी सेक्टर में काम करने वाले बाइक सवार युवक-युवती को टक्कर मारी थी, जिससे दोनों की मौत हो गई थी। घटना के समय आरोपी नशे में था। वह 200 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से कार चला रहा था। पुणे पुलिस के अनुसार, अब तक मामले में 9 लोगों की गिरफ्तारी हो चुकी है। पुणे पुलिस ने 25 जुलाई में 7 लोगों के खिलाफ आपराधिक षड्यंत्र रचने, सबूत मिटाने और ब्लड सैंपल बदलने के आरोप में केस दर्ज किया था। इनमें नाबालिग के माता-पिता, ससून जनरल अस्पताल के दो डॉक्टर, एक कर्मचारी और दो बिचौलिए शामिल हैं।

एक ही परिवार के तीन बच्चों की डूबने से मौत

उदयपुर/गंजबासौदा (नप्र)। विदिशा में एक ही परिवार के तीन बच्चों की नदी में डूबने से मौत हो गई। तीनों क्योटन नदी में नहाने पहुंचे थे। तेज बहाव में बहकर करीब 50 फीट दूर गहरे पानी में चले गए। तीन घंटे चली सर्चिंग के बाद उनके शव बरामद किए गए।

घटना जिले के उदयपुर क्षेत्र में मंगलवार दोपहर करीब 12 बजे की है। बच्चों के चाचा देवेंद्र रघुवंशी ने बताया कि डूबने से उनके भतीजे ऋषि रघुवंशी पिता वीर सिंह रघुवंशी (8), उत्तम रघुवंशी पिता महेश रघुवंशी (15) और कृष्णा रघुवंशी पिता महेंद्र (14) निवासी मउली की मौत हुई है।

गहराई का नहीं लगा सके अंदाजा- बच्चे नदी के सुनारी घाट के किनारे पर नहा रहे थे। यहां पर पानी 12-15 फीट गहरा है। उन्हें अंदाजा नहीं था कि यहां इतनी गहराई है। वे जैसे ही नहाने उतरे गहरे पानी में डूब गए। नदी के तेज बहाव में वे करीब 50 फीट तक बहते हुए गहराई में समा गए। सूचना मिलने पर गंजबासौदा एसडीएम विजय राय, एसडीओपी मनोज मिश्रा, तहसीलदार संजीव राय सहित अन्य अफसर भी मौके पर पहुंचे।

ग्रामीणों ने तीन घंटे की सर्चिंग- गांव के सचिन रघुवंशी ने बताया कि नदी के तेज बहाव में तीनों बच्चे बह गए। सूचना मिलने पर गांव के लोग मौके पर पहुंचे। उन्होंने बच्चों की तलाश शुरू की। लोगों ने पानी में उतरकर सर्चिंग की। उदयपुर पुलिस चौकी को भी सूचना दी। पुलिस ने भी एसडीआरएफ को सूचना दी। टीम के मौके पर पहुंचने से पहले ही ग्रामीणों ने तीनों बच्चों के शव बरामद कर लिए।

अजमेर रेप कांड के 6 दोषियों को आजीवन कारावास

● 32 साल बाद मिला न्याय,5-5 लाख का लगाया जुर्माना

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के सबसे बड़े सेक्स स्कैंडल और राजस्थान के अजमेर के ब्लैकमेल कांड के बाकी बचे 7 में से 6 आरोपियों (नफीस चिश्ती, नसीम उर्फ टार्जन, सलीम चिश्ती, इकबाल भाटी, सोहिल गणी, सैयद जमीर हुसैन) को कोर्ट ने दोषी माना है। अजमेर की विशेष न्यायालय ने सभी को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। सभी पर 5-5 लाख रुपये का जुर्माना भी लगाया गया है। पोक्सो विशेष कोर्ट संख्या 2 ने यह फैसला सुनाया है। इससे पहले कोर्ट ने सभी 6 लोगों को दोषी माना था। साल 1992 में 100 से ज्यादा कॉलेज गर्ल्स के साथ गैंगरेप और उनकी न्यूड फोटो सर्कुलेट होने पर तहलका मच गया था। मामले में 18 आरोपी थे। 9 को सजा हुई थी। इससे पहले 6 अगस्त को फैसला आना था, लेकिन मामले की सुनवाई 20 अगस्त तक के लिए स्थगित कर दी गई थी। विक्रम सिंह राठौड़ ने बताया कि नफीस चिश्ती, सलीम चिश्ती, सौहेल गनी, जमील चिश्ती,इकबाल भाटी और नसीम के विरुद्ध पॉक्सो प्रकरण में चल रहे मुकदमे में फैसला आया है।

भोपाल के बाद रीवा में बैंक डकैती का था प्लान

ज्वेलरी शॉप में लूट का मामला; जीजा-साले को अनुमान था- जिंदगी भर ऐश की जिंदगी काटेंगे

भोपाल (नप्र)। ज्वेलरी शॉप में लूट के मास्टरमाइंड अग्निवीर ट्रेनी जवान मोहित ने फरारी के दौरान एक बैंक डकैती की योजना बना ली थी। भोपाल की वारदात में कामयाब होने के बाद उसके हौसले बुलंद हो चुके थे।

फरारी के दौरान वह रीवा की बैंक में डकैती की योजना बना रहा था। इस डकैती में उसका दोस्त अभय मिश्रा और जीजा आकाश राय साथ देने वाले थे। यही नहीं वह अपने कुछ पुराने साथियों को भी इसमें शामिल करना चाहता था। हालांकि, इससे पहले ही उसकी गिरफ्तारी कर ली गई। पुलिस पूछताछ में उन्होंने खुलासा किया है कि वह और उसके जीजा को अनुमान था कि वारदात के बाद वह जिंदगी भर ऐश की जिंदगी काटेंगे। भोपाल और रीवा छोड़कर रायसेन स्थित गांव में बस जाएंगे।

7 मिनट में की थी 50 लाख की लूट- घटना मंगलवार रात 10 बजे की है। शहर के बागसेवनिया स्थित ज्वेलरी शॉप में हेलमेट पहने दो बदमाश ज्वेलरी शॉप में घुसे। वे संचालक को कट्टा दिखाकर चांदी की राखियां, जेवर और कैश मिलाकर 50 लाख रुपए का माल लेकर भाग निकले थे। बदमाश 7 मिनट तक दुकान में रहे थे।

मामले में पुलिस ने रविवार को अग्निवीर ट्रेनी मोहित, उसके जीजा-बहन समेत 7 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपी मोहित पठानकोट के फतेहगढ़ में पदस्थ है। छुट्टी लेकर बहन के घर भोपाल आया था।

पुलिस ने घटना में इस्तेमाल की गई पिस्टल जब्त कर ली है। सोमवार को दोनों आरोपियों को कोर्ट में पेश कर दो दिन की रिमांड पर लिया है। आरोपियों की निशानदेही पर लूट का माल बरामद कर लिया है।

मामले की जांच में जुटी सभी 7 टीमें भी भोपाल लौट आई हैं। पुलिस की तीन टीमें केस की जांच के लिए पिछले चार दिनों से भोपाल में थीं। एक टीम रीवा, दो टीम मंडीदीप और सतलापुर तथा एक कटनी में डेरा डाले हुए थी।

पुलिस ने 400 से ज्यादा सीसीटीवी खंगाले- पुलिस कमिश्नर हरिनारायण चारी मिश्र के मुताबिक- 9 टीम जांच कर रही थीं। घटनास्थल के आसपास 20 किलोमीटर के रास्ते में लगे 400 से अधिक कैमरों के फुटेज खंगाले। इन फुटेज के आधार पर आरोपियों की पहचान की जा सकी।

उनके और परिजन के मोबाइल फोन सर्विलांस पर डाले गए। तकनीकी जांच के आधार पर पुलिस ने लूट करने वाले दोनों मुख्य आरोपी जीजा आकाश राय (24), उसके साले आर्मी में अग्निवीर ट्रेनी मोहित सिंह बघेल (19) को गिरफ्तार किया है।

जीजा पर कर्ज था, इसे चुकाने रची साजिश- मोहित ने लूट की साजिश रची थी। वह बहन के घर छुट्टियां मनाने आया था। जिस जगह लूट की गई, बहन-जीजा इससे महज 400 मीटर की दूरी पर रहते हैं। रात में वॉक करते समय मोहित दुकान की रेकी करता था। उसने यह अनुमान लगा लिया था कि रात 8.30 बजे के बाद दुकान का मालिक अकेला ही रहता है। इसी का फायदा उठाकर उसने लूट की। दोनों का पुराना कोई रिकॉर्ड नहीं है। आकाश बी.कॉम सेकेंड ईयर और मोहित बीए सेकेंड ईयर तक पढ़ा है।

इंदौर में तीन दिन बाद झमाझम बारिश

लोगों को उमस भरी गर्मी से मिली राहत; अगस्त में 10 सालों में तीसरी पार तापमान 32 डिग्री पार

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में मंगलवार सुबह 11 बजे बाद मौसम बदला और कई इलाकों में बादल छा गए। कुछ देर बाद शहर के पूर्वी और मध्य इलाके में बारिश का दौर शुरू हो गए। जिससे लोगों को गर्मी से राहत मिली। पिछले तीन दिनों से बारिश नहीं होने से गर्मी का अहसास होना शुरू हो गया था।

दरअसल तीन दिनों से मौसम एकदम साफ था। इस दौरान बूंदाबांदी भी नहीं हुई है। दूसरी ओर मौसम साफ होने और हवा की रफ्तार कम होने से गर्मी का अहसास ज्यादा हो रहा है। तीन दिनों से दिन का तापमान 31 डिग्री से ज्यादा बना हुआ है। रक्षा बंधन पर तो तापमान 32 डिग्री पार रहा जिससे लोगों को अगस्त माह में अप्रैल जैसी गर्मी का अहसास है। दस सालों में ऐसा तीसरी बार हुआ है जब तापमान 32 डिग्री पास पहुंचा है।

इधर मंगलवार सुबह से बादल छाए हुए है। इस बार अगस्त में सिर्फ 3 इंच बारिश हुई है जबकि सीजन की बारिश 17 इंच ही हुई है। यह कुल कोटे की बारिश (36) इंच से भी कम है। रविवार को दिन का तापमान 31.8 (+3) डिग्री और रात का तापमान 23.4 (+2) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया था।

सोमवार को दिन का तापमान 32.4 (+4) डिग्री और रात का तापमान 24 (+2) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। खास बात यह कि इस बार सावन बिना झड़ी के बीत गया। आज से भादौ शुरू हो गया। इस महीने बादल तेज बरसते हैं, लेकिन अगले तीन-चार दिन तेज बारिश के आसार नहीं हैं।

इंदौर में टाइल्स कर्मचारी की मौत

निर्माणाधीन बंगले में काम कर रहा था; साथी को दूसरी मंजिल में तड़पते मिला

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के गांधी नगर इलाके में रहने वाले एक टाइल्स कर्मचारी की मौत हो गई। जानकारी के मुताबिक वह अपने साथी के साथ एक मकान पर काम कर रहा था। तभी मशीन का तार लगाने ऊपर के फ्लोर में गया।

लेकिन मशीन स्टार्ट नहीं होने के चलते दोस्त ऊपर देखने गया तो वह सीने पर हाथ रखकर तड़प रहा था। उसे उपचार के लिए निजी अस्पताल ले जाया गया। यहां उसकी मौत हो गई।

गांधी नगर पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक आनंद (31) पुत्र जगदीश जटिया निवासी गरीब नवाज कॉलोनी की सोमवार को मौत हो गई। पुलिस के मुताबिक आनंद बोहरा कॉलोनी सुपर कॉरिडोर पर एक निर्माणाधीन बंगले में टाइल्स लगाने का काम कर रहा था।

उसके दोस्त ने उसे ऊपर तार लगाने का कहा। आनंद को आवाज दी कि उसने तार लगाए या नही। आनंद की तरफ से जबाब नहीं आने पर दोस्त ऊपर गया तो आनंद सीने पर हाथ रखकर तड़प रहा था। उसे नजदीक के गीतंजली अस्पताल ले जाया गया।

यहां से डॉक्टरों ने बरोठ अस्पताल भेज दिया। लेकिन यहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। आनंद के परिवार में उसका एक छोटा भाई है। जो रेडीमेंड का काम करता है। वही पत्नी कृष्णा और 4 साल की बेटी व माता पिता है। पुलिस मामले में जांच कर रही है।

इंदौर में बीजेपी विधायक मेंदोला के घर पहुंचे

सीएम मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने परिवार को दी सांत्वना, विधायक के पिता के निधन पर जताया शोक

इंदौर (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव मंगलवार को इंदौर पहुंचे। यहां उन्होंने इंदौर-2 से बीजेपी विधायक रमेश मेंदोला के निवास पहुंचकर उनके पिता चिंतामणी मेंदोला के निधन पर शोक जताया और श्रद्धा सुमन अर्पित किए। शोकाकुल परिवार से मिलकर शोक संवेदना व्यक्त की।

रविवार को विधायक रमेश मेंदोला के पिता चिंतामणि मेंदोला का 98 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे कुछ समय से बीमार थे।

मुख्यमंत्री डॉ यादव के साथ इस दौरान मंत्री कैलास विजयवर्गीय, मंत्री तुलसीराम सिलावट, महापौर पुष्यमित्र भार्गव, नगर अध्यक्ष गौरव रणदिवे सहित कई जनप्रतिनिधि मौजूद रहे। सीएम डॉ यादव यहां से एयरपोर्ट जाएंगे और वहां से भोपाल के लिए रवाना हो होंगे।

इंदौर के राउ में मवेशियों से भरी चार गाड़ियां पकड़ाईं

हिंदूवादी थाने पहुंचे; गाड़ियों के कांच फोड़े

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के राउ इलाके में हिंदूवादियों ने सोमवार रात मवेशियों से भरी चार गाड़ियां पकड़ी। इस दौरान गाड़ी के ड्राइवरों की पिटाई करते हुए उन्हें पुलिस के सुपुर्द कर दिया। कुछ गाडियों के कांच भी हिंदूवादियों ने फोड़ दिए। खबर लिखे जाने तक थाने पर कार्रवाई को लेकर हिंदूवादी जमा थे।

राउ पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक सोमवार रात हिंदू संगठन के लोगों को मवेशियों से भरी गाड़ी इलाके से निकलने की सूचना मिली थी। इसके बाद घेराबंदी कर चार गाड़ियां पकड़ी गई। जिसमें कई मवेशी भरे हुए थे। बाद में हिंदूवादी कार्रवाई को लेकर थाने पर जमा हो गए।

इंदौर में 5वीं फ्लोर पर लिफ्ट में फंसे 8 लोग

ना गार्ड, ना लिफ्टमैन, मुश्किल से लिफ्ट खोलकर बचाई जान

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर की स्कीम नंबर 140 के पास स्थित ग्रैंड एग्जॉटिक सनशाइन बिल्डिंग की लिफ्ट में सोमवार शाम 7.00 बजे 8 लोग लिफ्ट में फंस गए। दसवीं मंजिल से नीचे आने के दौरान अचानक पांचवीं मंजिल के आसपास यह लिफ्ट रुक गई। काफी चिल्लाने पर भी कोई मदद करने के लिए नहीं आया। लोगों ने बड़ी मुश्किल से लिफ्ट को खोला। वहां कोई गार्ड भी नहीं था ।

ओरियंटल कॉलेज के कर्मचारी पर चाकू से हमला

दो बदमाशों ने आधा दर्जन से अधिक वार किए, हालत गंभीर

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के रेवती इलाके में ओरियंटल कॉलेज के कर्मचारी को दो बदमाशों ने चाकू मार दिए। आरोपियों ने आधा दर्जन से अधिक वार किए। गंभीर हालत में कर्मचारी को अस्पताल में भर्ती कराया गया। पुलिस अस्पताल पहुंची। यहां कर्मचारी के बयान लिए। इसके बाद दोनों आरोपियों पर हत्या के प्रयास जैसी गंभीर धारा में केस दर्ज किया गया है। बाणगंगा पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक अभिषेक (20) पुत्र किरण चौहान निवासी रेवती रेंज के बयान के आधार पर करन पिता धर्मेंद्र और अजय पुत्र राजू पर गंभीर धाराओं में केस दर्ज किया गया है। अभिषेक ने अपने बयान में बताया कि वह ओरियंटल कॉलेज में नौकरी करता है। वह रेवती पहाड़ी मंदिर के पास बैठा हुआ था। तभी करण और अजय वहां बाइक से आए और पूर्व में हुए एक विवाद को लेकर अपशब्द कहने लगे। अभिषेक वहां से चुपचाप जाने लगा तो दोनों ने मारपीट शुरू कर दी। अजय ने दोनों हाथ पकड़े और करण ने चाकू निकाल कर करीब 7 से 8 बार चाकू मारा। जिसमें गर्दन, सिर, पीठ, कंधे पर घाव लगने से अभिषेक वहीं गिर गया।

इंदौर डीएवीवी कराएगा ऑनलाइन कॉपी चेकिंग

टीचर के चेहरे से ही होगा लॉग-इन; कॉपी चेकिंग की ऐसी होगी पूरी प्रोसेस

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर की देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी ने ऑनलाइन मूल्यांकन की तैयारी कर ली है। यूनिवर्सिटी ने एग्जाम कॉपी चेकिंग की पारंपरिक व्यवस्था को तकनीकी की मदद से बदलने का कदम उठाया है। इसके तहत स्टूडेंट्स की कॉपी स्कैन कर टीचर्स को कम्प्यूटर पर ऑनलाइन उपलब्ध करवाई जाएगी। टीचर कॉपी चेक कर यहीं पर नंबर भी दे देंगे। जानिए क्या है पूरी प्रोसेस और इससे क्या फायदा होगा।

चेकिंग सिस्टम को लेकर प्रेजेंटेशन देखा- ऑनलाइन कॉपी चेकिंग सिस्टम के लिए देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी के द्वारा टीसीएस से सहयोग लिया जा रहा है। दोनों के बीच बातचीत लगभग पूरी हो चुकी है। कंपनी चेकिंग सिस्टम को लेकर प्रेजेंटेशन दे चुकी है। जिसे कुल गुरु डॉ.रेणु जैन सहित यूनिवर्सिटी के अन्य आला अधिकारियों ने देखा है। कंपनी इसके लिए एक सॉफ्टवेयर बनाएगी, जो एमपी ऑनलाइन के साथ काम करेगा।

पायलट प्रोजेक्ट के तहत कुछ कोर्स सिलेक्ट

ऑनलाइन कॉपी चेकिंग सिस्टम को लेकर यूनिवर्सिटी स्टेप बाय स्टेप आगे बढ़ रही है। शुरुआत में कुछ कोर्स की कॉपी ऑनलाइन चेक करवाने का फैसला लिया गया है। अधिकारियों के अनुसार पायलट प्रोजेक्ट के तहत अभी बीबीए, बीसीए, एमबीए जैसे कोर्स को शामिल किया है। इन कोर्स में सक्सेस मिलने पर अन्य कोर्स की कॉपी चेकिंग भी ऑनलाइन सिस्टम से जोड़ दी जाएगी।

सिस्टम के बारे में यूनिवर्सिटी के अधिकारी और कर्मचारियों को सॉफ्टवेयर के बारे में बाकायदा ट्रेनिंग दी जाएगी। परीक्षा विभाग के अधिकारी और कर्मचारियों के प्रशिक्षण का पहला चरण पूरा हो चुका है। उन्हें शुरुआती जानकारी दे दी गई है।

डीएवीवी के दायरे में अब भी 225 से ज्यादा कॉलेज

खरगोन में नई यूनिवर्सिटी बनने के बाद डीएविवि के दायरे में अब सवा दो सौ से ज्यादा कॉलेज हैं, जबकि सवा दो लाख से ज्यादा स्टूडेंट हैं। नई यूनिवर्सिटी बनने से खरगोन, बड़वानी, खंडवा, बुरहानपुर और आलीराजपुर जिलों के कॉलेज डीएवीवी के दायरे से बाहर हो गए हैं। 1 जुलाई से एकेडमिक बदलाव लागू हो चुका है।

बहनें राखी बांधने आई, भाई ने किया सुसाइड

6 माह पहले हुई थी शादी; पत्नी से चल रहा था विवाद

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के लसूड़िया में रहने वाले एक कम्प्यूटर बिलिंग ऑपरेटर ने सुसाइड कर लिया। घटना के पहले उसकी बहनें उसे राखी बांधने आई थी। लेकिन वह कमरे से बाहर ही नहीं निकला। पिता ने उसे देखा तो वह फंदे पर लटका हुआ था। बाद में उसे नजदीक के अस्पताल ले जाया गया। जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

लसूड़िया पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक अमन (32) पुत्र रामकरण शर्मा निवासी स्कीम नंबर 78 ने अपने घर में सोमवार रात फांसी लगा ली। दोस्तों ने बताया कि अमन ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर में बिलिंग का काम करता है। शाम को घर आया और सीधे कमरे में चला गया। रात में करीब 8 बजे पिता उसे बुलाने पहुंचे तो वह फंदे पर लटका था।

दो बहनें राखी बांधने पहुंची- दोस्तों ने बताया कि अमन माता-पिता का इकलौता बेटा है। उसकी तीन बहनें हैं। एक बहन राजस्थान में रहती है। जबकि दो बहनें आसपास ही रहती हैं। वह राखी बांधने के लिए आई थी। लेकिन अमन ने राखी बधंवाने के पहले ही इस तरह का कदम उठा लिया।

6 माह पहले हुई थी शादी- अमन की 6 माह पहले ही जयपुर में शादी हुई थी। 1 माह के अंदर ही उसकी पत्नी उसे छोड़कर अपने मायके चली गई। दोनों के बीच तनाव चल रहा था। पत्नी अपने अमन से तलाक चाहती थी। जिसे लेकर वह डिप्रेशन में था। पुलिस सुसाइड नोट को लेकर जांच कर रही है।

कर्णावत होटल के मैनेजर और स्टाफ ने की मारपीट

स्टूडेंट ने कराया केस, थाली में कड़क बाफले छोड़ने की बात पर पीटा

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर की भंवरकुंआ पुलिस ने कर्णावत होटल के मैनेजर और स्टाफ के खिलाफ मारपीट का केस दर्ज किया है। शिकायतकर्ता एक स्टूडेंट है। जो यहां पर खाना खाने गया था। उसे खाने में कड़क बाफले मिले। जो उसने छोड़ दिए। इस पर मैनेजर से कहासुनी हुई। होटल के स्टाफ ने स्टूडेंट से मारपीट कर दी।

भंवरकुआ पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक जितेंद्र पुत्र बलवंत सिंह चौहान निवासी यसन ग्राम माचलपुर ने बताया कि वह आनंद नगर भंवरकुंआ में किराए से रहकर पढ़ाई कर रहा है। एक दिन पहले वह रात में 10 बजे चितावद रोड पर कर्णावत होटल में खाना खाने पहुंचा। जितेंद्र ने बताया कि उसने खाना खा लिया। इसके बाद स्टाफ ने कहा कि थाली में खाना बच गया है। उसे खत्म करे। तब कहा कि बचा हुआ खाना नहीं खा सकता। थाली में जो बाफले हैं वह काफी कड़क हैं। इसी बात को लेकर होटल का स्टाफ अपशब्द कहने लगा।

इसी दौरान होटल मैनेजर वहां पहुंचा। उसने भी अपशब्द कहे। जितेंद्र ने रोका तो मैनेजर ने स्टील की थाली से सिर में मार दिया। जितेंद्र के सिर से खून निकलने लगा। वही स्टाफ ने भी मारपीट की। तब आसपास के लोग आ गए। उन्होंने बचाव किया। इसके बाद मैनेजर ने धमकी देकर कहा कि इधर दिखना मत, नहीं तो ठीक नहीं होगा। बाद में जीजा को कॉल कर बुलाया। मेडिकल के बाद कर्णावत होटल के मैनेजर और स्टाफ को लेकर शिकायत की।

चलती एक्टिवा पर शख्स को आया अटैक

बेटी ने रोते हुए लोगों से मांगी मदद; पुलिसकर्मी ने सीपीआर देकर बचाई जान

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में एक शख्स को चलती एक्टिवा पर अटैक आ गया। साथ जा रही 14 साल की बेटी ने रोते हुए लोगों से मदद मांगी। तभी वहां से गुजर रहे एक हेड कॉन्स्टेबल ने उन्हें सीपीआर देकर उनकी जान बचाई।

घटना इंदौर-महू रोड पर सोमवार शाम करीब 5.30 बजे की है। पीथमपुर के रहने वाले जगदीश अपनी बेटी के साथ जा रहे थे। तभी उन्हें घबराहट होने लगी। उन्होंने एक्टिवा साइड में रोकी। इसके बाद गाड़ी पर ही बैठ गए। बेटी उन्हें संभालने के लिए गाड़ी से उतरी। पिता को पसीने से लथपथ देख वह भी घबराने लगी। रोते हुए लोगों से मदद मांगने लगी। कुछ देर में वहां भीड़ लग गई।

सीपीआर देने के बाद चलने लगी सांसें- किशनगंज थाने में पदस्थ हेड कॉन्स्टेबल राघवेंद्र रघुवंशी वहां बाइक से गुजर रहे थे। भीड़ देखकर वे रुके और बच्ची से पूछा तो उसने पिता की ओर इशारा किया। जगदीश तब तक जमीन पर गिर गए थे। राघवेंद्र ने तुरंत मामला समझकर उन्हें सीपीआर दी। कुछ ही सेकेंड में जगदीश की सांसें ठीक से चलने लगी। वे बेहोशी की हालत से बाहर आए। उन्होंने पुलिसवाले को धन्यवाद दिया।

इंदौर एमवाय में बर्थडे बनाने वालों को पुलिस ने पकड़ा

थाने में कान पकड़कर मांगी माफी, 5 पर प्रतिबंधात्मक कार्रवाई

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के एमवाय अस्पताल में शक्ति प्रदर्शन करने और केक काटने वाले 5 युवकों को संयोगितागंज पुलिस ने पकड़ा। सभी से थाने में कान पकड़कर माफी मांगवाई।

संयोगितागंज टीआई ने उन्हें सख्त हिदायत देते हुए ऐसा घटना दोबारा होने पर कार्रवाई की बात कही है। दरअसल, एमवाय अस्पताल में एंबुलेंस कर्मियों के बीच गैंगवार को लेकर जेल से छूटने के बाद दीपक वर्मा और उसके साथियों ने शक्ति प्रदर्शन किया था। साथियों द्वारा हार माला से स्वागत किया गया। वही बाद में केक काटा था।

मामले की जानकारी डीसीपी हंसराज जैन तक पहुंची। उन्होंने साफ के तौर पर कार्रवाई की बात कही। जिसमें 5 आरोपियों को पकड़कर थाने लेकर आया गया। उन्होंने कान पकड़कर थाने में माफी मांगी और पुलिस द्वारा उन पर प्रतिबंधात्मक कार्रवाई कर छोड़ा गया।

इंदौर निगम ने सड़कों के गड्ढे भरना शुरू किया

पूरे शहर में एकसाथ चलेगा काम, 22 जोन में 22 जेसीबी और 22 डंपर लगाए

इंदौर (एजेंसी)। नगर निगम ने सड़कों के गड्?ढे भरना शुरू कर दिया है। सभी 22 जोन में 22 जेसीबी और 22 डंपर लगाकर पैचवर्क किया जा रहा है। प्रमुख सड़कों, चौराहों के साथ ही निगम कॉलोनी के अंदर की सड़कें भी सुधारेगा। यह काम लगातार जारी रहेगा।

सोमवार को खंडवा रोड, झाबुआ टॉवर के आगे, रेलवे स्टेशन मार्ग, राम मंदिर बड़ी ग्वालटोली, सरवटे बस स्टैंड क्षेत्र के आसपास, जवाहर मार्ग, गंगवाल बस स्टैंड क्षेत्र, भोलाराम उस्ताद मार्ग, स्कीम 140 क्षेत्र, भंडारी ब्रिज चौराहा, डीआरपी लाइन चौराहा, श्रम शिविर चौराहा, चिकमंगलूर चौराहा, जेल रोड चौराहा, एमजी रोड पुलिस थाना चौराहा व अन्य क्षेत्रों में काम शुरू किया। महापौर पुष्यमित्र भार्गव व जनकार्य प्रभारी राजेंद्र राठौड़ ने बताया बारिश के दौरान गड्ढे भरने का काम जारी रहता है। कॉलोनी के अंदर लिंक सड़कों को भी सुधारा जाएगा। क्षेत्र के आसपास, जवाहर मार्ग, गंगवाल बस स्टैंड क्षेत्र, भोलाराम उस्ताद मार्ग, स्कीम 140 क्षेत्र, भंडारी ब्रिज चौराहा, डीआरपी लाइन चौराहा, श्रम शिविर चौराहा, चिकमंगलूर चौराहा, जेल रोड चौराहा, एमजी रोड पुलिस थाना चौराहा व अन्य क्षेत्रों में काम शुरू किया। महापौर पुष्यमित्र भार्गव व जनकार्य प्रभारी राजेंद्र राठौड़ ने बताया बारिश के दौरान गड्ढे भरने का काम जारी रहता है। कॉलोनी के अंदर लिंक सड़कों को भी सुधारा जाएगा।

संपादकीय

उधर लद्दाख में खदबदाहट

इधर जम्मू कश्मीर में 10 साल बाद विधानसभा चुनावों की घोषणा के बाद राजनीतिक हलचलें तेज हो गई हैं, वहीं बीते पांच साल से जम्मू कश्मीर से अलग होकर केन्द्र शासित प्रदेश बने लद्दाख में भी खदबदाहट बढ़ गई है। लद्दाखियों की मांग भी पूर्ण राज्य के दर्जा देने, राज्य को संविधान की छठवी सूची में शामिल करने तथा लद्दाख को लोकसभा की एक अतिरिक्त सीट देने की है। साथ ही उनका यह भी कहना है कि केन्द्र शासित प्रदेश बनने से उन्हें खास लाभ नहीं हुआ सिवाय पर्यटन बढ़ने के। लद्दाख का यह आंदोलन मुख्य रूप से जलवायुविद् और इंजीनियर सोनम वांगचुक की अगुवाई में चल रहा है। लेकिन सोनम की पृष्ठभूमि वामपंथी होने के कारण मोदी सरकार उन्हे तवज्जो नहीं देती। सोनम ने अब 23 अगस्त से 'दिल्ली चलो' यात्रा शुरू करने का ऐलान किया है। उनका कहना है कि बीते पांच सालों में केन्द्र शासित प्रदेश बनने के बाद लद्दाख के न तो प्रश्न मिटे और न ही पीड़ा। गौरतलब है कि कश्मीर में धारा 370 हटाने के बाद केन्द्र सरकार ने संसद में 'जम्मू और कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम, 2019' के तहत लद्दाख को केंद्र शासित प्रदेश बना दिया था। कश्मीर से अलग होने पर जहां लद्दाखियों ने खुशी मनाई थी, वहीं राज्य के मुस्लिम बहुल इलाके कारगिल में इसको लेकर खास उत्साह नहीं था। धीरे-धीरे लद्दाखवासियों का जोश भी ठंडा पड़ने लगा। लोग अपनी समस्याओं को लेकर सड़कों पर उतरने लगे। अब लद्दाखवासी बाहरी लोगों से अपनी संस्कृति, पहचान, जमीन और नौकरियों को बचाने की मांग कर रहे हैं। इसी संदर्भ में 'लद्दाख के नायक' कहे जाने वाले सोनम वांगचुक ने 21 दिनों की भूख हड़ताल की थी, जिसका असर 2024 के लोकसभा चुनावों पर भी दिखा। भाजपा का मजबूत गढ़ माने जाने वाले लद्दाख में भाजपा प्रत्याशी को हार का सामना करना पड़ा और यहां के लोगों ने स्वतंत्र उम्मीदवार मोहम्मद हनीफ को भारी मतों से जिता दिया। भाजपा ने यह सीट अपने हाथों से खोई। क्योंकि जो प्रत्याशी इस क्षेत्र से पिछले दो लोकसभा चुनाव लगातार जीत रहा था, उसकी जगह दूसरे को टिकट देकर अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली। लद्दाख की एक बड़ी समस्या रोजगार की है। अनुच्छेद 370 समाप्त होने के बाद लद्दाख में लोक सेवा आयोग का अस्तित्व समाप्त हो गया। इस कारण राज्य में नई भर्तियां नहीं हो पा रही हैं। बताया जाता है कि नौकरियों के लिए लद्दाख निवासी प्रमाणपत्र (एलआरसी) अनिवार्य है, लेकिन सरकार की ओर से अब तक कोई स्पष्टता नहीं मिली है। उलटे धारा 370 हटने से जमीन और नौकरी भी केंद्र के हाथ में चली गई है। लद्दाखियों की पुरानी संस्कृति खत्म होती जा रही है। साथ ही पानी की दिक्कत बढ़ती जा रही है। ऐसा नहीं है कि केन्द्र शासित प्रदेश बनने के बाद लद्दाख में कोई विकास नहीं हुआ। शिक्षा के क्षेत्र में काफी काम हुआ है। बजट भी बढ़ा है। लेकिन लोगों की अपेक्षाएं कहीं ज्यादा हैं। उधर इस साल मार्च में सोनम वांगचुक ने अपनी मांगों को लेकर 21 दिनों का उपवास किया था। उसके अलावा लेह एपेक्स बॉडी (एलएबी) और कारगिल डेमोक्रेटिक अलायंस (केडीए) द्वारा केंद्रीय गृह मंत्रालय को ज्ञापन सौंपा। जिसके बाद राज्य में विरोध प्रदर्शन और तेज हो गए। सौंपने के साथ लद्दाख में विरोध प्रदर्शन तेज हो गया। इसी साल मार्च में लद्दाख बौद्ध संघ (एलबीए) के प्रमुख और पूर्व भाजपा सांसद थुपस्तान छेवांग के नेतृत्व में लद्दाख के छह सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने दिल्ली में गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात की। लेकिन गृह मंत्री ने उनकी मांगों को खारिज कर दिया। इससे भी स्थानीय लोगों में केन्द्र सरकार के प्रति नाराजी और बढ़ गई।

सामयिक

सुसंस्कृति परिहार

लेखक स्तंभकार हैं।

आजाद भारत में स्त्री अस्मिता को कौन बचाएगा?

पिछले नौ अगस्त कोलकाता की घटना ने एक बार फिर यह बता दिया है कि आज़ादी के 77 साल बाद भी स्त्री दरिंदों के आगे कितनी कमज़ोर है। महिला सशक्तिकरण, बेटी-बचाओ बेटी पढ़ाओ, नारी सुरक्षा कानूनों के तमाम प्रयास नाकाम रहे हैं। जबकि पुरुष सशक्त हुआ है वह गैंगरेप के साथ पीड़िता के साथ कुत्सित और क्रूरतम व्यवहार कर जान भी लेने लगा है।इस डरावने सच के पीछे जो मानसिकता काम कर रही है उसकी पड़ताल बेहद ज़रूरी है।

ऐसी घटनाएं आमतौर पर नशा करने वाले लोग ही करते हैं। निर्भया को याद कीजिए किस तरह बस के कर्मियों ने वीभत्स कृत्य किया था। ताज़ा कोलकाता, उत्तराखंड और मुजफ्फरपुर में भी ऐसी स्थिति में घृणित और जघन्य कृत्य हुआ। मुजफ्फरपुर में स्तन काटने की नांगली प्रथा को दुहराया गया। यहां यह भी प्रयास होने चाहिए कि पीड़िता के साथ हुई यौन हिंसा के तौर-तरीकों का प्रचार प्रसार ना हो। क्योंकि रेप करने वाले उसका अनुसरण करने लगते हैं।

दूसरी बात यह कि ऐसे लोगों का मनोबल बहुत सी ऐसी घटनाओं के दुर्दांत अपराधियों के साथ हुए राजनैतिक बर्ताव से भी बढ़ता है। कुलदीप सैंगर ही नहीं बल्कि सैकड़ों महिलाओं के साथ यौनाचार करने वाले जेल से पैरोल पर आज़ादी के दिन ही छोड़े जाते है। ये है राम-रहीम और आसाराम बापू। याद कीजिए पिछले साल सुबह सुबह स्वाधीनता दिवस पर बिल्किस बानो के साथ अमानवीय कृत्य करने वालों को जेल से रिहा किया गया था। जिस देश की सत्ता इस महान दिवस पर ऐसे बलात्कारियों के साथ ऐसा व्यवहार करें तो जुनूनी लोगों का मनोबल बढ़ता ही है।खास बात ये कि सत्ता इन अपराधियों का स्वागत अभिनन्दन भी करने में संकोच नहीं करती।

तीसरी बात यह भी सामने आई है कि निर्भया कानून बनने के बाद जब महिलाएं सतर्क होने लगीं तो गैंगरेप बढ़ना शुरू हुआ तथा एवीडेंस समाप्त करने पीड़िता को मारा जाना भी तेजी से शुरू हुआ। इस कानून में फांसी का प्रावधान था पर आज तक शायद ही किसी को फांसी हुई हो। बहुसंख्यक मामले तो परेशानियों के चलते वापस ले लिए जाते हैं। इससे भी ऐसी प्रवृत्ति

को भी बढ़ावा मिला है।

इससे अधिक शर्मनाक इस देश के लिए क्या हो सकता जब विश्व पटल पर सुर्खियां बटोर चुकी महिला पहलवान प्रधानमंत्री से कुश्ती महासंघ के अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह के अपमान जनक यौन व्यवहार की शिकायत करती है। उनकी सुनवाई नहीं होती वे धरना प्रदर्शन करती है संसद के सामने प्रदर्शन करने बाध्य होती है किंतु वहां से उन्हें अपमानित कर खदेड़ा जाता है। क्योंकि भाजपा सांसद बृजभूषण रसूखदार एक बड़े वोट बैंक का आधार है।

देश की सत्ता पर प्रतिष्ठित महामानव जो मणिपुर में हुए नारी अस्मिता और अपमान पर अब तक चुप्पी साधे हैं तो नारी की यह हालत तो होनी ही है। यह चुप्पी ऐसे कुत्सित कार्य करने भी प्रेरित करती है। सोचिए यदि साहिब बहादुर महिला पहलवानों और मणिपुर मामलों पर त्वरित कदम उठाकर सम्बंधित लोगों पर सख्त कार्रवाई करते तो आज ऐसी घटनाएं लगातार सामने नहीं आती। अफसोसजनक बात ये है कि ना महिला पहलवानों की और ना ही मणिपुर की महिला खिलाड़ियों की बात सुनी गई।

शायद यह उस स्कूल का दोष है जहां से वे निकले हैं जहां महिलाओं से घृणा करना सिखाया जाता है। विवाह को उलझन समझा जाता है उसे तो सिर्फ़ घर की शोभा और गुलाम समझा जाता है। यही वजह है कि इस स्कूल के सौ वर्ष पूरे होने को हैं लेकिन एक भी स्कूल की महिला को उच्च पद पर प्रतिष्ठित नहीं किया गया। पत्नि से नफ़रत और बिना तलाक उसे मुकद्दर के भरोसे छोड़ देना इस स्कूल की नियति रही है उसके छात्र से कैसे महिला सुरक्षा और सम्मान की अपेक्षा की जा सकती है।

याद कीजिए कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष, प्रतिपक्ष नेता माननीय सोनिया गांधी जी को कितने अपमानजनक अपशब्द ऐसे लोगों से सुनने पड़े। जबकि इससे पहले राजनैतिक गरिमा कभी नहीं टूटी। गत दिनों राज्यसभा के सभापति देश के उपराष्ट्रपति जगदीप धनकड़ द्वारा सांसद जया बच्चन के लिए हंस हंस कर जिन शब्दों का प्रयोग किया गया वह एक सांसद की गरिमा को आहत करता है। महिलाओं के साथ ये कैसा व्यवहार हो रहा है संसद में शर्मनाक है यह। घोर निंदनीय भी।

कहने का आशय यह है कि यौन कुंठा से ग्रस्त लोग ही स्त्री के प्रति ऐसा रवैया अख्तियार करते हैं। आज देश में ऐसा माहौल पनप रहा है। इसका निदान तब तक असंभव है जब तक सरकार खुले में शराब पीने वालों पर सख्त कार्रवाई नहीं करती तथा सबसे ज़रूरी बात है अपराधियों को संरक्षण के बजाय सख़्त सजा का प्रावधान नहीं करती,राजनैतिक और गैर राजनैतिक अपराधियों के साथ होने वाला व्यवहार एक जैसा ज़रूरी है। ऐसे मामलों का जल्द से जल्द निपटारा किया जाए ताकि लोग उस घटना को ना भूल पाएं और सबक लें। महिलाओं को भी एकजुट होना होगा। महिला यदि महिला की तकलीफ़ में शामिल नहीं होती है,तो उसे धिक्कार है। सबसे अहम् बात ये भी है वे अपने साथ हो रहे दुर्व्यवहार को छुपाएं नहीं सार्वजनिक करें और सबके साथ मिलकर बेझिझक उजागर करें। ध्यान रखें ऐसे मामले में कसूरवार महिला नहीं होती जिसे अमूमन महिला समाज समझ लेता है। लगता है अब यह कमान जिम्मेदार महिलाओं को अपने सहयोगियों के साथ संभालनी होगी। क्योंकि इस सत्ता से महिला अस्मिता की बात करना बेमानी है। महिला जब जागेगी तभी सबेरा होगा।

कार्यप्रणाली

राजीव खंडेलवाल

(लेखक, कर सलाहकार एवं पूर्व बैतूल सुधार न्यास अध्यक्ष हैं)

देश में ईडी की कार्रवाई पर उठते सवाल

''जैमर'' का मतलब तो आप समझते ही होंगे। जैमर के क्षेत्र में मोबाइल नेटवर्क न मिलने के कारण वह सेल फोन को उसे क्षेत्र में प्रभावी रूप से अक्षम कर देता है। इसी प्रकार पीएमएलए (धन शोधन निवारण अधिनियम) के अंतर्गत ईडी (प्रवर्तन निदेशालय) के 'हाथ' (हथियार) अधिकतर राज नेताओं में विपक्षी दलों के नेताओं की गर्दन तक ही पहुंच पा रहे हैं, अन्य किसी नेताओं के पास नहीं, क्यों? क्योंकि वहां पर एक अवरोधक यंत्र ('ऊपर'' का आदेश) 'जैमर' लगा हुआ है? ईडी किसी नागरिक पर कोई कार्रवाई तभी करती है, जब उसने प्रथम दृष्ट्या पीएमएलए के अंतर्गत कोई गुनाह किया हो। 'पीएमएलए' के अंतर्गत आरोपी को स्वयं को निर्दोष सिद्ध करने का भार उसी पर होता है। आरोपी इस आधार पर अपने को निर्दोष या उसके विरुद्ध की गई कार्रवाई को गलत नहीं ठहरा सकता है कि, ईडी ने उसके विरोधी तथाकथित अपराधियों के विरुद्ध कार्रवाई नहीं की है। ईडी का यह एक पक्ष है। परंतु तथ्य इसके विपरीत हैं।

ईडी जहां भी छापे मारेगी, निसंदेह वहां कुछ न कुछ अवश्य मिलेगा ही। लेकिन अलहदा न्यायालयों में अधिकांश प्रकरणों में ईडी सजा नहीं दिला पाई। जब ईडी को विपक्ष के नेताओं के यहां छापा मारने से फुर्सत मिलेगी, तभी तो वह सत्ताधारी पार्टी के नेताओं के घर जाएगी? इतनी प्राथमिकता तो ''सत्ता'' की मिलनी ही चाहिए? इस बात को विपक्ष को समझना चाहिए?

ईडी ने एनडीए के शासन में 5155 केस दर्ज किये व 7264 छापे और तलाशी ली, जबकि 2005 से 2014 के बीच यूपीए सरकार में 1797 प्रकरण तथा केवल 112 तलाशी हुई। ईडी ने विपक्ष के जिन राजनेताओं के विरुद्ध छापेमारी, उनमें से कितने नेता भाजपा मे शामिल हो गए? तत्पश्चात ईडी द्वारा उन पर क्या कार्रवाई हुई? इस पर ईडी को अपनी विश्वसनीयता बनाये रखने के लिए एक श्वेत पत्र जारी करना चाहिए। 'इंडियन एक्सप्रेस' की एक रिपोर्ट के अनुसार विपक्ष के 25 बड़े नेता नेता, जिनके विरुद्ध सीबीआई या ईडी की कार्रवाई चल रही थी, के भाजपा में शामिल होने के बाद तीन मामलों में खात्मा लगा दिया गया व 20 मामलों में कार्रवाई शिथिल हो गई। 2014 से 2022 के बीच 121 बड़े राजनेताओं की जांच ईडी कर रही है, जिनमें से 115 नेता अर्थात् 95 प्रतिशत विपक्षी पार्टियों के हैं। ठाणे के शिवसेना विधायक प्रताप खलनायक के विरुद्ध मनी लांड्रिंग का मामला ईडी के दर्ज करने के बाद उन्होंने मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे को एक पत्र लिखकर भाजपा से संबंध सुधार कर सरकार बनाने की सलाह तक दे डाली।

ईडी पर एक पक्षीय होकर ''टारगेट कर पक्षपात पूर्ण'' कार्रवाई करने का आरोप लगाए जाने के बाद ईडी ने आंकड़े जारी कर उन आरोपों को नकारते हुए अपनी स्थिति स्पष्ट की है। 31 जनवरी तक 513 लोगों को गिरफ्तार किया है वहीं, 1.15 लाख करोड़ रुपए से अधिक की संपत्ति कुर्क की है। ईडी का साफ कहना है कि वह अपराधियों के विरुद्ध कार्रवाई करती है,'निरापराधियों' के विरुद्ध नहीं, जो 96त्न सजा मिलने के रिकॉर्ड से सिद्ध भी होता है। राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसी (एनआईए) और सीबीआई का सजा का प्रतिशत क्रमशः 94 एवं 68 प्रतिशत है। राजनेताओं (पूर्व व वर्तमान जनप्रतिनिधियों) के विरुद्ध केवल 3 प्रतिशत मामले हैं और 9 प्रतिशत मामलों में ही तलाशी वारंट जारी किए गए हैं। ईडी का यह कथन है कि जनवरी 2023 तक 25 में से 24 मामलों में 45 आरोपियों को सजा हुई, वहीं 1142 मामलों में चार्ज शीट होकर ट्रायल चल रहे हैं। हालांकि ईडी का यह दावा भ्रामक है। एक जुलाई 2005 से ईडी को पीएमएलए 2002 लागू करने का अधिकार मिलने के बाद से 31 जनवरी 2023 तक 5906 मामले दर्ज हुए हैं, जिनमें से 1142 अर्थात मात्र 19 फीसदी मामलों में ही चार्जशीट प्रस्तुत की गई है। लोकसभा में दी गई एक जानकारी के अनुसार वर्ष 2014 से 2024 के बीच धन शोधन निवारण अधिनियम 2002 (पीएमएलए) के तहत 5297 मामले दर्ज किए गए, जबकि मात्र 46 मामलों एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार 63 मामलों में ही दोष सिद्धि हो पाई। जबकि यूपीए के कार्यकाल में एक भी सजा नहीं हुई। इस प्रकार दर्ज मामलों से सजा होने तक दोष सिद्धि का प्रतिशत मात्र 1.18 प्रतिशत होता है, न कि 96 प्रतिशत। ये तो ''पंसेरी में पांच सेर की चूक हुई''! स्वयं उच्चतम न्यायालय ने छत्तीसगढ़ के सुनील कुमार अग्रवाल के मामले में सुनवाई के दौरान यह कहा कि ईडी को सजा की दर को बढ़ाने के लिए कुछ 'वैज्ञानिक जांच' की जानी चाहिए।

ईडी द्वारा मामला दर्ज होते ही आरोपियों की गिरफ्तारी हो जाती है। पीएमएलए के कानून कड़े होने के कारण महीनो-सालों जमानत नहीं मिलने से अनावश्यक रूप से जेल में रहना पड़ता है, क्योंकि चार्ज शीट ही लंबे समय तक प्रस्तुत नहीं होती है। कई बार सर्वोच्च न्यायालय ने कहा है कि ''जमानत को सजा के रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता है'', लंबे समय तक आरोपी को जेल में रखना संविधान के अनुच्छेद 21 में दिए गए स्वतंत्रता के अधिकार का हनन है।

ईडी द्वारा पीएमएलए के अंतर्गत दायर किए गए कुछ महत्वपूर्ण प्रकरणों में विभिन्न माननीय न्यायालयों द्वारा की गई टिप्पणियों को देख ले तो आपको स्पष्ट रूप से यह समझ में आ जाएगा कि ईडी किस तरह से 'हवाबाजी' व 'दिशा निर्देश' में कार्य करती है।

शिवसेना के सांसद व मुखपत्र ''सामना'' के संपादक संजय राउत के प्रकरण में पीएमएलए न्यायालय के विशेष न्यायाधीश ने स्पष्ट रूप से यह कहा कि यह मामला पीएमएलए कानून के क्षेत्राधिकार के अंतर्गत आता ही नहीं है, दीवानी मामला है। ईडी को जमकर फटकार लगाते हुए संजय राउत की गिरफ्तारी कों अवैध व शिकार बनाने का कृत्य दिया। इसे ''विच हंट'' भी कहा। आप इसे ''हड़बड़ी ब्याह कनपटी सिंदूर'' भी कह सकते हैं। 'यस बैंक' के संस्थापक राणा कपूर को जमानत देते हुए इन्हीं माननीय न्यायाधीश ने कहा कि पीएमएलए के अंतर्गत गठित विशेष अदालत की स्थापना के बाद से आज तक एक भी मनी लॉन्ड्रिंग मामले का फैसला नहीं हो सका है। ''ईडी ने लंबित मामले की सुनवाई शुरू करने के लिए कोई सक्रिय रूख नहीं दिखाया है''।

दूसरा मामला 'आप' सांसद संजय सिंह का है, जहां ईडी द्वारा आधिकारिक रूप से जमानत का विरोध न किए जाने पर उच्चतम न्यायालय ने जमानत दी। तीसरा मामला अनिल देशमुख महाराष्ट्र के पूर्व गृह मंत्री का है। उच्च न्यायालय के समक्ष लंबे समय से लंबित जमानत याचिका पर उच्चतम न्यायालय की लताड़ के बाद उच्च न्यायालय ने शीघ्र सुनवाई कर अनिल देशमुख को इस आधार पर जमानत दी की दो गवाहों के बयान जिनके आधार पर प्रकरण दर्ज किया गया वे बयान प्रथम दृष्ट्या सुनी सुनाई बातों (हियरसे) पर आधारित थे। चौथा मामला झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन का है, जब उच्च न्यायालय ने हेमंत सोरेन के खिलाफ पीएमएलए एक्ट के अंतर्गत प्रथम दृष्ट्या कोई साक्ष्य न पाए जाने के कारण उनका जमानत आवेदन स्वीकार किया गया। ताजा मामला दिल्ली के पूर्व उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया का 17 महीने बाद जमानत पर जेल से छोड़ा गया। सर्वोच्च अदालत ने हाई कोर्ट व ट्रायल कोर्ट को यह समझाइश दी की अदालतें यह समझें की जमानत एक नियम है और जेल एक अपवाद। सजा के तौर पर जमानत से इनकार नहीं किया जा सकता है। राइट टू स्पीडी ट्रायल (त्वरित सुनवाई का अधिकार) को अनदेखा किया गया।

ईडी की कार्यप्रणाली की तथाकथित गंभीरता का एक उदाहरण और देखिए! ईडी ने देश से भाग गए भगोड़ों की गिरफ्तारी के लिए वर्ष 2015 से लेकर अभी तक कुल 19 रेड कॉर्नर नोटिस जारी किए हैं, जिनमें से एक भी अपराधी का प्रत्यारोपण अभी तक नहीं हो पाया है।

उबड़-खाबड़ रस्तों पर स्थिर गति से चलने वाले डॉ. शंकरदयाल शर्मा

जयंती पर विशेष

यशवंत गोरे

लेखक स्तंभकार हैं।

डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने राजनीति के उबड़-खाबड़ एवं लड़खड़ा देने कि वाले रास्ते पर बड़े स्थिर गति से कदम रखते हुए देश के सर्वोच्च पद राष्ट्रपति तक स्थान पाया है। एक बार उन्होंने अपने भाषण में कहा कि था वे काजल की कोठरी से बेदाग बाहर निकले हैं। यह उनकी आत्म स्तुति नहीं थी। उन्होंने कांग्रेस जैसी पार्टी में लम्बी पारियां खेलने के बाद भी व्यक्तिगत स्वार्थों के संरक्षण के दोषारोपण की कोई हल्की सी खरोच भी उन पर नहीं आयी। घोटालों की राजनीति में निश्चित ही यह गर्व एवं गौरव की बात थी।

19 अगस्त 1918 को भोपाल के पुराने शहर के चौक स्थित गुलियादाई मोहल्ले में एक साधारण से ब्राह्मण परिवार वैद्य पं. खुशीलाल शर्मा के यहां जन्मे डॉ. शर्मा ने अपने जीविकोपार्जन की शुरुआत एक शिक्षक के रूप में की। 1951 में भोपाल प्रदेश कमेटी के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने अपना राजनीतिक जीवन शुरू किया। 1952 में भोपाल स्टेट के पहले मुख्यमंत्री बने और वे उस समय के सबसे युवा मुख्यमंत्री थे। वे भोपाल के मुख्यमंत्री पद पर 1956 तक बने रहे इसके बाद भोपाल का तत्कालीन मध्यप्रदेश में विलय हो गया और भोपाल शहर प्रदेश की राजधानी बनाए जाने में डॉ. शर्मा की बड़ी भूमिका थी। जब एक शिक्षक प्रदेश का शिक्षा मंत्री बन जाए तो शिक्षा के क्षेत्र में उसे क्या करना चाहिए। यह उन्होंने 1956 से 1967 तक प्रदेश मंत्रिमंडल के शिक्षा मंत्री के रूप में रहते हुए दिखाया। उन्होंने गांव-गांव में शिक्षण संस्थाएं खोलने का अभियान चलाया तथा ग्रामीण जनता को साक्षर करने की बुनियाद डाली।वे सुर्खियों में तब आए जब उन्होंने स्कूली किताबों में धर्मनिरपेक्षता के लिए 'ग से गणेश' को 'ग से गधा' से बदल दिया था।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा भोपाल की उन शख्सियतों में से एक हैं, जो विदेश जाने वाले इस शहर के सबसे पहले शख्स थे। वे तत्कालीन भोपाल नवाब हमीदुल्ला खान के शासनकाल में इंग्लैंड और अमेरिका में अध्ययन के लिए गए थे। उन्हें पढ़ाई के लिए विदेश भेजने में नवाब ने उनकी मदद की थी। डॉ. शर्मा ने न केवल शिक्षा बल्कि राजनीति के क्षेत्र में भी बहुत नाम कमाया। लेकिन उन्होंने उस वक्त भोपाल का नाम पूरी दुनिया में चमका दिया, जब वे देश के राष्ट्रपति पद पर आसीन हुए। डॉ. शर्मा शुरू से ही प्रतिभाशाली थे। शिक्षा के प्रति इनका इतना गहरा लगाव था कि भोपाल में शायद ही कोई दूसरा शख्स होगा, जिसके पास डिग्रियों का अंबार हो। डॉ. शर्मा की प्राथमिक शिक्षा ब्रिजिसिया नाम की एक सरकारी माध्यमिक शाला में हुई। भोपाल से स्नातक पास करने के बाद उन्होंने सेंट जॉन्स कॉलेज आगरा, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, लखनऊ विश्वविद्यालय, फित्जविलियम कॉलेज, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय तथा हार्वर्ड लॉ स्कूल से शिक्षा प्राप्त की। डॉ. शर्मा ने लखनऊ विश्वविद्यालय और कैम्ब्रिज में विधि का अध्यापन कार्य भी किया।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा द्वारा विभिन्न अवसरों पर उनके द्वारा दिए गए भाषणों में उसके गहन चिंतन एवं विद्वता झलकती थी। राष्ट्रपति के रूप में अपने अंतिम गणतंत्र दिवस संदेश में उन्होंने देश की व्यवस्था एवं सत्ता पर कटाक्ष कर कटघरे में खड़ा कर दिया था। देश के शासकों में नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों के पतन पर चिंता व्यक्त की थी एवं राष्ट्र भक्ति की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने महात्मा गांधी के प्रसिद्ध सात पापों का विशेष उल्लेख किया था जो कि वर्तमान स्थिति का निचोड़ है। (1) सिद्धांत विहीन राजनीति (2) श्रम विहीन सम्पति (4) विवेक विहीन भोग विलास (4) चरित्र विहीन शिक्षा (5) नैतिकता विहीन व्यापार (6) मानवीयता विहीन विज्ञान तथा (7) त्याग विहीन पूजन। इन पापों का उल्लेख कर उन्होंने नेताओं, व्यापारी, बुद्धिजीवी, पूंजीपति जैसे शक्तिशाल वर्गों की ओर इशारा किया था।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

डॉ. प्रेमचंद द्वितीय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

उम्मीदों पर भारी वजन!

ओलंपिक खेलों को देर रात तक आंखें गाड़ गाड़ कर देखने वाले पं शिवनारायण जी सुबह उनींदे उनींदे उठकर अपनी बढ़ती हुई तोंद पर हाथ फेरते हुए जब मॉर्निंग वॉक पर आए तो बोले हम लोग तो वजन की वैल्यू ही नहीं समझते हैं। कोई वजन बढ़ाने की तो कोई वजन घटाने की जतन की चर्चा करता रहता है लेकिन ओलंपिक में हुए ग्राम में बढ़े हुए वजन के दाम ने पदक पर तो पलीता लगाया, डेढ़ अरब भारतीयों के अरमानों की कुश्ती को चित्त कर दिया और हां फिल्में भी केवल हंसी, हसीना को लेकर नहीं बनती है फिल्म में जब एक चुटकी सिंदूर की कीमत तुम क्या जानो रमेश बाबू ....! डायलॉग से सीख खेल वालों ने नहीं ली। लेकिन औकात नहीं रखने वाले सौ ग्राम वजन ने ले ली और हाथ से फिसलते पदक के पीछे सौ ग्राम का वजन कह रहा है 100 ग्राम वजन की कीमत तुम क्या जानो....!

इस पर अखिलेश जी बोले एक ग्राम हो या एक हजार ग्राम, हर तोले, माशा, ग्राम, मिलीग्राम की औकात है और इसी मामूली ग्राम ने ओलंपिक में अनहोनी कर दी ,पदक का सपना टूट गया लेकिन यह वजन नहीं टूटा और उम्मीद पर वजन भारी पड़ गया। चाहे ग्राम हो या रत्ती,तोला, माशा हो सभी तोल मोल में अहम भूमिका रखते हैं। तौल में रत्ती भर ज्यादा कम होने पर पलड़ा झुक जाता है और रत्ती तो इतनी अहमियत वाली है कि वह,शर्म, की छोटी सी छोटी यूनिट है। जब कोई भी अनैतिक कार्य करता है तो लोग कहते हैं कि, रत्ती भर भी शर्म नहीं,आती है। तोला, माशा, तोल मोल की मीमांसा को सुनते हुए सुनील भैया तमतमाए और बोले वजन से पदक गया है, उम्मीदें गई है,कुश्ती का दाव खाली गया है। महज कुछ ग्राम वजन ने ओलंपिक खेल में लंपा मार दिया। हम सबके लिए है मात्र सौ ग्राम वजन सबक का पाठ सीखाता है।

इस पर रूमानी विचारधारा ले अरविंद जी बोले चाहे खेल हो या और अन्य कोई खेला,राजनीति हो या व्यवसाय,कमाई धमाई हो या अर्थ अनर्थ, सही गलत जो कुछ भी हो हमें वजन के साथ-साथ फिगर की भी फिकर करना सीखना होगा क्योंकि वजन की और फिगर की फिकर एक दूसरे की पूरक है।

वे बोले आप नहीं जानते वजन बहुत भारी होता है और चाहे वजन भारी हो या हल्का वजन वजन होता है और यह वजन कपड़ों को छोटा करने से,बाल छटने से,दौड़ने भागने से,नाखून काटने से, एक्सरसाइज करने से एक दम कम ज्यादा नहीं होता है। वजन को जब पता चलता है कि मुझसे छेड़खानी की जाने वाली है तो उल्टा बहना शुरू कर देता है। कम करने पर ज्यादा और ज्यादा करने पर कम होकर अपनी असली औकात बता देता है। अरे यही वजन है जो खेल-वेल पर ही नहीं फिकर विकर पर भी बहुत कवायद कराता है।

इस पर अपने सकारात्मक विचारों को पुष्ट करने वाले पुष्कर जी बोले लोगों को केवल एक चुटकी भर सिंदूर की कीमत फिल्म वाले अपने इल्म को चलाने के लिए पूछते हैं अरे सौ ग्राम वजन की कीमत तो हमने जान ली है कि वह पदक को पद यानी पैरों में गिरा देता है, वे बोले अरे न केवल वजन वरन एक सेकंड की कीमत भी उस धावक से पूछो जो एक सेकंड के न जाने कौन से हिस्से से पीछे रह जाता है।

अरे उस मेधावी छात्र से लीक हुए पर्चे की कीमत पूछो जिससे उसका रिजल्ट रिजेक्ट हो जाता है और मिली नौकरी हाथ से चली जाती है।

अरे ट्रैफिक जाम होने की कीमत उस एंबुलेंस में सोए मरीज से पूछो जो समय पर हॉस्पिटल नहीं पहुंच पाता है।

अरे रोटी की कीमत उस भूखे से पूछो जो पेट की आग बुझाने के लिए दर दर भटकता है।

अरे नंगे पैर चलने वालों को उसकी कीमत पूछो जिसके पैर में बिवाई फटी हो।

इस पर मनोज भाई बोले जब किलोग्राम, मिलीग्राम वजन को सब निशाना बने रहे तो यह भी सुन लो प्रेमचंद जी आप तो साहित्यकार बनते फिरते हो तो लोगों से दूर होती पुस्तकों की कीमत को तुम क्या जानो! अरे शब्दों के वजन भी कम नहीं होते हैं। शब्दों के दबाव अच्छे-अच्छे रेसलर के दाव से कम दबाव वाले नहीं है। जिनकी बातों में वजन होता है वह मौन को अपना लेते हैं।जिंदगी का वजन भी हल्का-फुल्का नहीं होता है वह नायाब होता है। इसलिए वजन को चाहे जितना कोसो, मात्र सौ ग्राम वजन का सौवा हिस्सा भी मुश्किले खड़ी करने में कामयाब होता है। इसलिए हर तरह की उम्मीदों पर भारी है वजन का, विजन!

पुण्यतिथि पर विशेष

सविता आनंद

लेखिका-उस्ताद बिस्मिल्लाह खान की विरासत पर उस्ताद के पोते आफ़ाक़ हैदर के साथ सक्रियता से काम कर रही हैं।

शहनाई का खत उस्ताद बिस्मिल्लाह खान के नाम

स्वाधीनता की पहली किरण के साथ जब मन प्रफुल्लित हो उठा। आकाश में जब इंद्रधनुष ने शहनाई के सभी स्वरों का स्वागत किया। लाल किले के प्राचीर से जब राग काफी की गूंज पूरी दुनिया ने सुनी मैं तुम्हारे साथ थी। उसके साथ ही एक मुसलसल सिलसिला शुरू हुआ, हर साल 15 अगस्त की सुबह का आगाज़ हमारी मौजूदगी से ही होता रहा और गणतंत्र दिवस पर भी शहनाई की मीठी धुनों ने उन ऐतिहासिक पलों को हमेशा के लिए हमने खुद में समेट लिया।

प्रिय बिस्मिल्लाह,

तुम्हें इस दुनिया से गए 18 बरस हो चुके और इन 18 बरसों में तुम्हारे जाने के बाद जो मैंने महसूस किया वो तुमसे साझा करना चाहती हूँ। मात्र 3 साल की उम्र में तुम्हारे नन्हें हाथों ने जब पहली बार मुझे छुआ तो मुझे एहसास हो चुका था कि मैं तुम्हारे साथ पूरे ब्रह्मांड के दर्शन करूंगी। मेरी और तुम्हारी यात्रा 9 दशकों तक साथ रही और कई पड़ावों से गुज़री, स्वतंत्र भारत के पहले भी और आज़ाद भारत के बाद भी।

स्वाधीनता की पहली किरण के साथ जब मन प्रफुल्लित हो उठा। आकाश में जब इंद्रधनुष ने शहनाई के सभी स्वरों का स्वागत किया। लाल किले के प्राचीर से जब राग काफी की गूंज पूरी दुनिया ने सुनी मैं तुम्हारे साथ थी। उसके साथ ही एक मुसलसल सिलसिला शुरू हुआ, हर साल 15 अगस्त की सुबह का आगाज़ हमारी मौजूदगी से ही होता रहा और गणतंत्र दिवस पर भी शहनाई की मीठी धुनों ने उन ऐतिहासिक पलों को हमेशा के लिए हमने खुद में समेट लिया।

हमने आज़ादी के स्वर्ण युग का जश्न भी साथ मनाया पर अफ़सोस हम आज़ादी के अमृत महोत्सव में शामिल न हो सके और शायद देश भी हमारे योगदान को तब तक भुला चुका था। शायद तुम्हारी बूढ़ी कांपती उंगलियों से निकले स्वर, उन कानों तक नहीं पहुँच सके जो अक्सर हर शुभ अवसर में, हर प्रायोजन में हमें बुलावा भेजा करते थे। शायद तुम मुझे भी अपने साथ ले गए और मैं फिर से उसी दौर को जीने को मजबूर हूँ, जो गुमनामी में पहले जिया करती थी। मुझे तुमने जो मान दिया मैं उसके लिए सदा के लिए तुम्हारी आभारी हो गई। घर की ड्योढ़ी और आंगन से निकालकर तुमने मुझे कैसे सातवें आसमान पर बैठा दिया और पूरे विश्व को शहनाई की स्वर लहरियों से गुंजायमान कर दिया इसका कोई सानी नहीं है। तुमने मुझे साधारण से असाधारण बना दिया। लोग कहते हैं कि मैं शादियों की शहनाई हूँ, पर तुम्हारी उँगलियों ने मुझे आध्यात्म की आवाज़ बना दिया। मंदिर की सीढ़ियों पर, गंगा के किनारे, तुम्हारे साथ मैंने मोक्ष की ध्वनि भी गुंजाई। तुम्हारी हर तान में मैं तुम्हारे दिल की धड़कन को महसूस कर सकती थी। तुमने मुझे बस एक वाद्य यंत्र नहीं समझा, बल्कि एक जीवित साथी के रूप में अपनाया। तुम्हारे बिना मेरा अस्तित्व अधूरा है, जैसे तुमने मुझे अपनी आत्मा का अंश बना लिया हो। मुझे दुःख होता है जब सोचती हूँ कैसे बाबा काशी विश्वनाथ के प्रति तुम्हारी अपार श्रद्धा थी और जब भी तुम काशी से बाहर रहते थे तब काशी स्थित बालाजी मंदिर की दिशा की ओर मुंह करके बैठते थे। काशी में संगीत आयोजन की एक प्राचीन एवं अद्भुत परंपरा थी लेकिन बिस्मिल्लाह बाबा विश्वनाथ के जीर्णोद्धार में

तुम्हें और मुझे भुला दिया गया।

तुम्हारे जाने के बाद, मेरी आवाज़ में वह जादू भी नहीं रहा। मुझे बजाने वाले तो कई हैं, पर तुम्हारी वो ख़ास बिस्मिल्लाह की तान अब कोई नहीं छेड़ता। वो कजरी, वो चैती अब कहीं सुनाई नहीं पड़ती। मुझे लगने लगा है मैं भी तुम्हारे साथ उसी रोज़ दफ़न हो गई थी, जिस रोज़ फातमान दरगाह पर तुम्हारी मज़ार को पूरा करने पर राजनीति होने लगी। उसे पूरा होने में दस साल लग गए और ये दस साल मेरे लिए किसी कैदखाने से कम नहीं थे।

मुझे एहसास हुआ कि ये दुनिया चढ़ते सूरज को ही सलाम करती है, बुझ जाने के बाद सब एक लौ की माफिक ही याद आते हैं। जिस बिस्मिल्लाह ने शहनाई को दुनिया के मानचित्र पर बनारस के समकक्ष लाकर खड़ा कर दिया, जिस बिस्मिल्लाह से बनारस के घाटों की हर सुबह शहनाई की गूंज से सरोबार होती थी, जिस बिस्मिल्लाह ने ताउम्र गंगा जमुनी तहजीब की बेजोड़ मिसाल कायम की, उसी बिस्मिल्लाह को सब इतनी जल्दी भूल गए यह भी भारत रत्न मिलने जैसे ही अनुभव होता होगा शायद?

तुम्हारे बिना, मैं खोई-खोई सी हूँ। मैं इंतजार करती हूँ, शायद किसी दिन तुम फिर से आओ और दालमंडी के हड़हा सराय का बाठ देखता तुम्हारा मकान फिर से बैठकों के उस दौर से जीवंत हो उठे जो तुम अपने संगी साथियों के साथ जिया करते थे।

इस मकान में कभी कभार दूर-दराज़ से कोई राहगीर चले आते हैं देखने की भारत रत्न कैसे रहा करते थे। कैसे अपनी संगीत साधना से बिना किसी लाग लपेट के देश का गौरव बन बैठे और देश के सभी सर्वोच्च सम्मान पाकर भी लेशमात्र न इतराए। सही मायनों में भारत रत्न भारत का गौरव इसे ही कहते हैं शायद? बिस्मिल्लाह तुम भारत रत्न के सही मायनों में पैरोकार हो।

आज (21 अगस्तुत) तुम्हारी पुण्यतिथि पर सब तुम्हें याद करेंगे। तुम्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करेंगे लेकिन शायद इस मकान की धरोहर की ओर फिर किसी का ध्यान न जाएगा। लेकिन मैं ये सोचकर ही गौरवान्वित हो उठती हूँ कि जब भी देश में सांझी संस्कृति की बात होगी, तब उस्ताद बिस्मिल्लाह की बात होगी। जब भी शहनाई का ज़िक्र होगा, उस्ताद ही ज़हन में होंगे।

जब भी बनारस का नाम लिया जाएगा। उस्ताद का नाम सर्वोपरि होगा। जब भी माँ गंगा को पुकारा जाएगा उस्ताद बहती नदी की तरह उसमें शामिल होंगे....और मैं तुम्हारी इन सभी यादों में बहती धारा की तरह सदा मुश्तमिल (शामिल) रहूँगी।

पर्यावरण

कुमार सिद्धार्थ

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

लुप्त होता प्राकृतिक प्रकाश; बढ़ता प्रकाश प्रदूषण

आज दुनिया की अधिकांश आबादी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रकाश प्रदूषण की चपेट में है। मनुष्य द्वारा उत्पन्न तमाम तरह के प्रदूषणों में से, प्रकाश प्रदूषण पर सबसे कम ध्यान दिया जाता है। लेकिन प्रकाश प्रदूषण आज विकसित और विकासशील दुनिया के सामने सबसे प्रचलित मुद्दों में से एक है। खुले आकाश के नीचे रहने के बावजूद कृत्रिम प्रकाश की अतिशयता के कारण रात में आकाश को निहारना मुश्किल हो गया है।

बढ़ते प्रकाश प्रदूषण के कारण कई तरह की समस्याएं पैदा हो रही हैं। शोधकर्ताओं की मानें तो प्रकाश प्रदूषण पारिस्थितिकी तंत्र पर खतरनाक असर डाल रहा है जिससे इंसानों और जानवरों की नींद लेने की प्राकृतिक प्रक्रिया प्रभावित हो रही है। अन्य जीव मसलन कीटों, मछलियों, चमगादड़ों, चिड़ियों व जानवरों की प्रवासन प्रक्रिया भी प्रभावित हो रही है। प्रकाश प्रदूषण का नकारात्मक असर पेड़-पौधों पर भी पड़ रहा है। इस मुद्दे पर बॉम्बे हाई कोर्ट ने अप्रैल 2024 को महाराष्ट्र सरकार, बृहन्मुंबई नगर निगम (बीएमसी) और ठाणे तथा मीरा भयंदर नगर निगमों को नोटिस जारी कर त्योहारों के दौरान पेड़ों को सजावटी लाइटों से ढकने के दुष्प्रभावों पर चिंता जताई थी। यह नोटिस एक जनहित याचिका पर जारी किया गया था, जिसमें कहा गया कि कृत्रिम लाइटें पेड़ों के साथ-साथ रात्रिचर जीवों को भी नुकसान पहुंचाती हैं।

विशेषज्ञों का मानना है कि ये सजावटी रोशनी पौधों की सर्कैडियन लय को बाधित करती है, जो विभिन्न जैविक प्रक्रियाओं को नियंत्रित करने वाली आंतरिक घड़ी है। इसके अतिरिक्त, लगातार कृत्रिम रोशनी प्राकृतिक प्रकाश चक्र को बाधित करती है, जिससे प्रकाश संश्लेषण प्रभावित होता है, जो कि महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसके द्वारा वे प्रकाश ऊर्जा को रासायनिक ऊर्जा में परिवर्तित करके अपनी गतिविधि को बढ़ावा देते हैं और संभावित रूप से रात्रिचर वन्यजीवों को नुकसान पहुंचाते हैं।

मानव निर्मित कृत्रिम प्रकाश ने दिन-रात के अंतर को दूर कर दिया है। यह अब प्रदूषण का रूप ले चुका है, जो अपने आप में एक बड़ी चुनौती बनता जा रहा है। यह प्रकाश प्रदूषण इंसानों के साथ-साथ जमीन पर रहने वाले दूसरे जीवों (जुगनू और पक्षियों से लेकर हाथी जैसे विशाल जीव) को भी प्रभावित कर रहा है। सबसे ज्यादा चिंताजनक बात यह है कि इसका असर समुद्री जीवों के प्रजनन से लेकर हार्मोनल चक्र तक पर पड़ रहा है।

पक्षियों तथा पशुओं पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव की बात करें तो रात्रि में प्रकाश के कारण पक्षी समझ ही नहीं पाते हैं कि सुबह है या रात। कृत्रिम प्रकाश उन प्रवासी पक्षियों को भ्रमित करता है, जो वर्ष में मौसम के अनुसार अपना स्थान परिवर्तित करते हैं। यह तथ्य है कि पक्षी चांद और तारों को देख कर ही दिशा का अनुमान लगाते हैं। लेकिन प्रकाशीय क्षेत्र से गुजरते वक्त उनके लिए दिशा का अनुमान असंभव हो जाता है। उसका नतीजा यह होता है कि वे गंतव्य स्थान पर नहीं पहुंच पाते और कई बार तो रास्ता भटकने से प्रतिकूल मौसम की चपेट में आकर अपनी जान गंवा बैठते हैं।

न्यूयॉर्क स्थित कॉर्नेल विश्वविद्यालय से जुड़े वैज्ञानिकों ने अध्ययन के आधार पर पता लगाया है कि यह कृत्रिम प्रकाश प्रवाल, प्लैंकटन, कछुओं और छोटी मछलियों से लेकर विशाल व्हेल तक सभी तरह के समुद्री जीवों पर असर डाल रहा है। यह उनमें प्रजनन से लेकर हार्मोनल चक्र तक में गड़बड़ी की वजह बन रहा है। वैज्ञानिकों ने बढ़ते एलईडी बल्ब के उपयोग को इस समस्या की एक प्रमुख वजह बताया है।

सर्वविदित है कि विकसित और विकासशील दोनों ही देशों में वैश्विक स्तर पर प्रकाश प्रदूषण बढ़ रहा है। सैटेलाइट डेटा से पता चलता है कि सन् 2012 से 2016 तक, लगातार रोशनी वाले क्षेत्र 2.2 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से चमके हैं। प्राकृतिक रूप से अंधेरा क्षेत्र भी सिकुड़ रहा है क्योंकि पृथ्वी के कृत्रिम रूप से रोशनी वाले बाहरी क्षेत्र में प्रति वर्ष 2.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इसके अलावा, हाल ही में नागरिक वैज्ञानिकों के माप से संकेत मिलता है कि सन् 2011 से 2022 तक औसत रात्रि आकाश प्रति वर्ष 9.6 प्रतिशत अधिक चमकीला हुआ है, जो हर 8 साल में आकाश की चमक को दोगुना करने के बराबर है।

अंधकार से इंसान की बढ़ती दूरी ने कई तरह की बीमारियों को जन्म दिया है। गौर करें तो यह बात पर्याप्त नींद लेने तक सीमित नहीं है, बल्कि रात्रि में भी प्रकाश के समक्ष होने से भी है, जो अप्राकृतिक है। वैज्ञानिकों के मुताबिक इंसानी शरीर में 'मेलाटोनिन' नामक एक हार्मोन का निर्माण तभी संभव होता है जब नेत्रों को अंधकार का संकेत मिलता है। इसका काम शरीर की प्रतिरोधक क्षमता से लेकर कोलेस्ट्राल में कमी अथवा अन्य अति आवश्यक कार्यों का निष्पादन है, जो एक स्वस्थ शरीर के लिए आवश्यक है।

वायु प्रदूषण और जल प्रदूषण आदि को लेकर स्वाभाविक तौर पर हम काफी चिंतित रहते हैं। पर हमें प्रकाश प्रदूषण पर भी सोचना होगा। आने वाले समय में बढ़ते कृत्रिम प्रकाश से होने वाली दिक?कतों के समाधान की दिशा में कारगर पहल करने की जरूरत होगी। कृत्रिम प्रकाश प्रदूषण के प्रति जागरूकता ही पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूती प्रदान कर सकती है। यदि हम कृत्रिम प्रकाश व्यवस्था को दुरुस्त कर लेते हैं तो बहुत हद तक संभव है कि हम मनुष्य और पक्षियों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले बुरे प्रभाव से बचा सकते हैं। वैसे अब दुनियाभर में प्रकाश प्रदूषण को पर्यावरण के प्रति गंभीर चिंता के रूप में देखा जाने लगा है। इसे नियंत्रित करने के लिए दुनिया के कई देशों में कानूनी पहल होने लगी है। हमें भी इस दिशा में अभी से पहल करने की आवश्यकता होगी।

रक्षाबंधन पर सुपर मून

खगोलीय घटना में दिलचस्पी रखने वालों के लिए रक्षाबंधन खास मौका था। 19 अगस्त को दिखाई दिया चंद्रमा सुपर मून के श्रेणी में रखा गया है। चंद्रमा धरती के चक्कर लगाने के साथ ही धरती के नजदीक और दूर भी होता रहता है। जब चंद्रमा पृथ्वी से 90 फीसदी से ज्यादा करीब होता है तो सामान्य चंद्रमा की तुलना में 30 फीसदी ज्यादा चमकीला और 14 फीसदी बड़ा होता है। रक्षाबंधन की रात बादलों के मध्य इसकी चमक देखते ही बन रही थी।

चित्र एवं विवरण - ऋतुराज बुड़ावनवाला, खाचरौद

प्रकृति प्रेमियों को करीब बुला रहे झर-झर झरते झरने

बैतूल। बैतूल जिला सतपुड़ा के हरे-भरे वनों के लिए प्रसिद्ध है। बारिश शुरू होते ही पूरा जिला हरियाली से लद जाता है। यह हरे-भरे वन जहां सभी का मन मोह लेते हैं वहीं इन वनों के भीतर स्थित झरने वन की सुंदरता में चार चांद लगा देते हैं। झर-झर करते इन झरनों का दीदार करने कोई बहुत दूर भी जाने की जरुरत नहीं पड़ती। जिला मुख्यालय के समीप खेड़ी सांवलीगढ़ क्षेत्र में ही कई झरने हैं जो कि अपने अद्भुत सौंदर्य से सभी का मन मोह लेते हैं। यही कारण है कि यहां बारिश में प्राकृतिक सौंदर्य को निहारने वालों का तांता लगा रहता है। ताप्ती नदी के किनारे घने हरियाले

वनों में स्थित और खूबसूरत झरनों में शुमार कन्हिया कोल झरना इन दिनों सभी के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। यहां लोग दूर-दूर से मौज मस्ती करने आते हैं। रविवार के दिन तो इस झरने पर मेला लग जाता है। लोग पिकनिक मनाने भी आते हैं।

एक नहीं यहां है तीन झरने-इस क्षेत्र में मात्र एक कन्हिया कोल झरना ही नहीं है बल्कि दो और झरने भी हैं। इनमें विक्टोरिया फाल और दूधधारा झरने शामिल हैं। दूधधारा झरने से जब पानी नीचे झरता है तो ऐसा लगता कि दूध की धारा बह रही है। इसी के चलते इसका नाम दूधधारा रखा गया है।

प्रशासन का नहीं कोई ध्यान-प्रशासन और वन विभाग चाहे तो इस झरने पर थोड़ी सी सुविधाएं मुहैया कराकर इन्हें पर्यटन स्थल की तरह विकसित कर सकते हैं, लेकिन अफसोस कि यहां ऐसा कुछ भी नहीं किया गया है। इतना सुंदर झरना होने के बावजूद भी प्रशासन का इन स्थलों की ओर ध्यान नहीं है। यहां तक कि यहां सुरक्षा के इंतजाम तक नहीं है।

आने-जाने को रास्ता तक नहीं-पहाड़ियों से होकर आने-जाने वालों के लिए रैलिंग और आवागमन के लिए मार्ग तक की सुविधा यहां नहीं है। यहां आने वाला मार्ग पूरी तरह जर्जर हो गया है। उसे सुधारने की दरकार है। जिससे यहां मौजूद तीन विख्यात झरनों तक आगंतुक सहूलियत से आ-जा सके और सुंदरता का लुत्फ उठा सके।

रक्षाबंधन पर 'एक पेड़ बहन के नाम' अभियान की शुरुआत

रक्षाबंधन पर बहन के नाम रोपित किया नारियल का पौधा, पर्यावरण संरक्षण का लिया संकल्प

बैतूल। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान से प्रेरित होकर समाजसेवी कुशकुंज अरोरा ने रक्षाबंधन के अवसर पर 'एक पेड़ बहन के नाम' अभियान की शुरुआत की। इस पहल का उद्देश्य बहन-भाई के रिश्ते को पर्यावरण संरक्षण से जोड़ना है। कुशकुंज अरोरा ने इस अभियान के माध्यम से रक्षाबंधन पर बहनों के नाम पर पौधारोपण करने का संदेश दिया है, जिससे पर्यावरण की रक्षा के साथ-साथ रिश्तों की गहराई और समर्पण को भी नई दिशा दी जा सके।

रामवन हमलापुर में कुशकुंज अरोरा ने अपनी बहन लवलीन अरोरा के नाम पर नारियल का पौधा रोपित किया और फिर राखी बांधकर दोनों ने मिलकर पर्यावरण की रक्षा का संकल्प लिया। कुशकुंज ने इस अवसर पर कहा कि यह पर्व हमेशा से भाई-बहन के रिश्ते का प्रतीक रहा है, लेकिन इस बार हमने इसे एक और उद्देश्य के साथ जोड़ा है वह है, पर्यावरण की रक्षा। जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों को देखते हुए अब यह जरूरी है कि हम अपने पर्यावरण की सुरक्षा हेतु ठोस कदम उठाएं। इसके जरिए हम आने वाली पीढ़ियों और परिवारों की सुरक्षा सुनिश्चित कर सकते हैं। इस अभियान के तहत कुशकुंज अरोरा और ग्रीन टाइगर संगठन ने 45 दिनों के भीतर 5100 पौधे लगाने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया। इस अवसर पर भागवत चढ़ोकार, तरुण वैद्य, पंकज खातरकर, संतोष डेहरिया, दीपक नामदेव, भावेश पटेल, और मोनू रैकवार भी उपस्थित रहे। सभी ने इस पहल की सराहना की और इस मुहिम को और आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। कुशकुंज अरोरा का यह प्रयास आने वाले समय में और भी प्रेरणादायक साबित होगा और समाज में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाने का काम करेगा

पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने सूचना क्रांति और पंचायती राज जैसे महत्वपूर्ण बदलावों की नींव रखी: हेमन्त वागद्रे

पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की जयंती पर जिला कांग्रेस ने अर्पित की श्रद्धांजलि

बैतूल। जिला कांग्रेस कमेटी ने पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की 79वीं जयंती पर एक श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस अवसर पर जिले के प्रमुख कांग्रेस नेताओं ने राजीव गांधी के व्यक्तित्व, उनके विचारों और देश के प्रति उनके योगदान को याद करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। जिला कांग्रेस अध्यक्ष हेमन्त वागद्रे ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी के आधुनिक भारत के निर्माण में दिए गए योगदान पर प्रकाश डाला और कहा कि वे एक दूरदर्शी नेता थे, जिन्होंने सूचना क्रांति और पंचायती राज जैसे महत्वपूर्ण बदलावों की नींव रखी। हेमन्त वागद्रे ने उपस्थित कांग्रेस कार्यकर्ताओं से राजीव गांधी के सिद्धांतों पर चलते हुए समाज और देश के विकास में योगदान देने की अपील की। संभागीय प्रवक्ता हेमन्त पगारिया ने राजीव गांधी की युवाओं के प्रति सोच और उनके द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि राजीव गांधी ने देश की प्रगति में युवा शक्ति के महत्व को समझा और युवाओं के लिए नई नीतियों की शुरुआत की।सेवादल जिला अध्यक्ष अनुराग मिश्रा ने राजीव गांधी के जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। उन्होंने कहा कि राजीव गांधी ने अपने नेतृत्व में देश को एक नई दिशा दी और युवाओं को राजनीति में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया। पूर्व सरपंच चंदू गोठी ने ग्रामीण विकास में राजीव गांधी के योगदान पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि राजीव गांधी ने पंचायती राज व्यवस्था के माध्यम से गांवों के विकास की नींव रखी और गांवों को सशक्त बनाने का कार्य किया।पूर्व नेता प्रतिपक्ष मंगू सोनी ने कहा कि राजीव गांधी का जीवन और उनका कामकाज हर भारतीय के लिए प्रेरणादायक है। उन्होंने युवाओं को उनके आदर्शों पर चलने के लिए प्रेरित किया और देश को आधुनिकता की ओर अग्रसर किया। पूर्व एनएस यू आई अध्यक्ष राजेश गावण्डे ने कहा कि राजीव गांधी ने अपने कार्यकाल में जो कदम उठाए, उन्होंने देश को प्रगति की दिशा में आगे बढ़ाया।

सतपुड़ा टाइगर रिजर्व क्षेत्र से विस्थापित परिवारों की दुर्दशा

रोजगार की कमी से गंभीर आर्थिक संकट, बच्चों का भविष्य भी अंधकारमय

के.पी. अग्निहोत्री भौरा/ संजय द्विवेदी बैतूल। सतपुड़ा टाइगर रिजर्व क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम पंचायत भतोड़ी के वन ग्राम तीताखेड़ी के आठ परिवारों को गत 22 मई 2024 को ग्राम चीता (नया भाड़भूड) ब्लाक केसला, जिला नर्मदापुरम के पास विस्थापित किया गया था। इन परिवारों से प्रशासन ने वादा किया था कि 18 वर्ष या उससे अधिक आयु के प्रत्येक व्यक्ति को दो विकल्प विभाग की ओर से दिए जा रहे है। पहले विकल्प में 15 लाख रुपये (12 लाख रुपये की एफडी. और 3 लाख रुपये नकद विभाग की ओर से दिए जाएंगे) या फिर दूसरे विकल्प में दो हेक्टेयर जमीन के साथ 3.25 लाख रुपये नकद विभाग की ओर से दिए जाएंगे। लेकिन तीन माह से ज्यादा समय बीत जाने के बावजूद भी न तो इन परिवारों को जमीन का आवंटन हुआ और न ही वादा की गई राशि उनके बैंक खातों में जमा की गई। इस देरी ने विस्थापित परिवारों के जीवन को संकट में डाल दिया है, जहां उनके सामने गंभीर आर्थिक समस्याएं खड़ी हो गई हैं।

रोजगार की कमी से आर्थिक संकट-नई जगह पर विस्थापन के बाद से इन परिवारों के आजीविका के सभी साधन समाप्त हो गए। रोजगार के अवसरों की बेहद कमी के चलते इन परिवारों के सदस्य अपनी मूलभूत जरूरतों को भी पूरा करने में असमर्थ हो गए हैं। विस्थापित ग्रामीणों का कहना है कि दुकानदार भी अब उन्हें उधार देने से मना कर रहे हैं, जिससे उनको खाने तक के लाले पड़े है।

ग्रामीण सुरेश वल्द हरि, अमरसिंग वल्द गेलसिंग, विशाल वल्द बैरसिंग, नेपाल वल्द जयपाल, किसनलाल, रोलसिंग वल्द बैरसिंग जयपाल वल्द पालसिंग का कहना है कि हमें वादा किया गया था कि विस्थापन के बाद हमारी जिंदगी बेहतर होगी, लेकिन हकीकत ठीक इसके बिल्कुल विपरीत है। रोजगार न होने के चलते हमें बेहद आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ रहा है। हमारे बच्चों का भविष्य अधर में है, और हमें किसी तरह से अपने परिवार का भरण-पोषण करना पड़ रहा है।

बच्चों की शिक्षा पर भी संकट-विस्थापित आठ परिवारों का कहना है कि उनके बच्चों की शिक्षा अब पूरी तरह से ठप हो गई हैं। पिछले तीन महीनों से वे स्कूल नहीं जा पा रहे हैं। आज तक उनके नाम नए स्कूल में दर्ज नहीं किए गए हैं। उनकी चिंता केवल बच्चों की शिक्षा तक ही सीमित नहीं, बल्कि मध्यान्ह भोजन से उनका एक टाइम का भोजन तो हो ही जाता था, अब उनका भरण-पोषण भी एक चुनौती बन गया है। इससे बच्चों का भविष्य अंधकारमय हो गया है।

अधिकारियों की उदासीनता और ग्रामीणों की पीड़ा-इस गंभीर स्थिति के बावजूद, सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के अधिकारियों का रवैया उदासीन बना हुआ है। ग्रामीणों ने आरोप लगाया है कि जब उन्होंने अपनी समस्याओं के बारे में अधिकारियों से संपर्क किया, तो उन्हें कोई संतोषजनक जवाब नहीं दया। इससे लगता है कि अधिकारी अपनी जिम्मेदारियों से पल्ला झाड़ रहे है।

तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता

यह स्पष्ट है कि सरकार और वन विभाग की उदासीनता के कारण विस्थापित परिवारों की समस्याएं दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही हैं। उनके पास न तो रोजगार के साधन हैं और न ही बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त पैसा। प्रशासन और वन विभाग को इस मामले को गंभीरता से लेकर विस्थापित ग्रामीणों की बुनियादी जरूरतों और समस्याओं का त्वरित निराकरण करना चाहिए। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि उन्हें वादा की गई आर्थिक सहायता और बुनियादी सुविधाएं शीघ्र मिलें, ताकि वे अपने परिवारों का भरण-पोषण कर उनका जीवन फिर से पटरी पर आ सके और उनके बच्चों का भविष्य अंधकारमय न हो सके।

इनका कहना-

हमने लाभार्थी राशि पहले ही बैतूल कलेक्ट्रेट को स्थानांतरित कर दी है। विस्थापित परिवारों को दिए गए विकल्प एक के तहत, बैतूल कलेक्ट्रेट में प्रक्रिया अभी लंबित है। मैं हमारे स्टाफ को बैतूल भेजकर इसे जल्द से जल्द पूरा करवाने का प्रयास करुंगी।

-पूजा नागले, उप संचालक सतपुड़ा रिजर्व नर्मदापुरम

मैं अभी बाहर हूं, कल बैतूल आकर आपसे इस संबंध में बात भी करूंगा और इस समस्या का निराकरण करवाता हूं ।

-नरेंद्र सूर्यवंशी, कलेक्टर बैतूल

गरीब परिवार के बेटे तुषार पवार ने नईदिल्ली में मनवाया लोहा

स्वतंत्रता दिवस परेड में बने विशेष अतिथि

बैतूल। जिला मुख्यालय के समीप स्थित ग्राम भड़ूस के होनहार छात्र तुषार पिता गणपति पवार ने इस वर्ष नई दिल्ली में आयोजित स्वतंत्रता दिवस परेड में विशेष आमंत्रित अतिथि के रूप में भाग लेकर अपने जिले का नाम रोशन किया। तुषार का चयन इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम के लिए नवोदय विद्यालय, प्रभात पट्टन में आयोजित जिलास्तरीय प्रेरणा उत्सव प्रतियोगिता के माध्यम से हुआ था, जिसमें जिले के सात हाईस्कूल और हायर सेकेण्डरी स्कूल के विद्यार्थियों ने भाग लिया था।

तुषार पवार, जो हायर सेकेण्डरी स्कूल भड़ूस के छात्र हैं, ने इस प्रतियोगिता में लिखित परीक्षा और साक्षात्कार के आधार पर श्रेष्ठ प्रदर्शन किया, जिससे उन्हें नई दिल्ली में आयोजित इस राष्ट्रीय स्तर के समारोह में शामिल होने का अवसर प्राप्त हुआ। तुषार के पिता, गणपति पवार, बैतूल में मकान की पुताई का कार्य करते हैं, जबकि उनकी माता, संध्या पवार मजदूरी का काम करती हैं। तुषार की बहन पायल पवार, 11वीं कक्षा की छात्रा हैं।

आर्थिक रूप से अत्यंत साधारण परिवार से आने वाले तुषार की इस उपलब्धि ने उनके माता-पिता और पूरे परिवार को गौरवान्वित किया है। तुषार की इस सफलता पर परिवार के साथ-साथ पत्रकार कल्याण परिषद जिला बैतूल इकाई के महासचिव संजय द्विवेदी, संभागाध्यक्ष राधेश्याम सिंहा, ब्लॉक अध्यक्ष सुनील सोनी, वरिष्ठ पत्रकार रामकिशोर पंवार, ग्राम पंचायत रोंढा के उपसरपंच प्रदीप डिगरसे, शाला परिवार से शिक्षक उमेश शर्मा सर सहित स्कूल के शिक्षकों, सहपाठियों, सामाजिक संगठनो और ग्राम वासियों ने हार्दिक बधाई दी। और कहा कि तुषार की यह उपलब्धि पूरे बैतूल जिले के लिए गर्व का विषय है।

उल्लास के साथ मनाया गया भुजलिया पर्व

निकाले गए अखाड़े, चौक-चौराहे पर दिखाए गए हेरतअंगेज करतब

बैतूल/मुलताई। रक्षाबंधन के दूसरे दिन परंपरागत रूप से मनाया जाने वाला भुजलिया पर्व हर्ष उल्लास के साथ मनाया गया महिलाओं ने गेहूं का ज्वारा जिसे भुजलिया कहा जाता है का धार्मिक रीति रिवाज के साथ पूजन पाठ कर शनि सरोवर में विसर्जन किया। इस अवसर पर प्रतिवर्ष अनुसार अनेक अखाड़े निकले गए जिसमें शामिल खिलाड़ियों ने अनेक आश्चर्यचकित कर देने वाली कलाओं का प्रदर्शन किया। भुजलिया पर्व पर नगर पालिका द्वारा शनि सरोवर में भुजलिया विसर्जन की व्यवस्था की गई थी विसर्जन स्थल पर नगर पालिका के कर्मचारियों को तैनात किया गया था। ताप्ती सरोवर पर भी सुरक्षा व्यवस्था के व्यापक इंतजाम किए गए हैं। भुजलिया के कार्यक्रम को देखते हुए नगर के मध्य से गुजरने वाले मुख्य मार्ग का आवागवन प्रतिबंधित करके बाईपास कर दिया गया है।

जय बजरंग अखाड़े के युवकों ने दिखाए हेरतअंगेज करतब-नगर में भुजलिया पर्व पर प्रतिवर्ष निकलने वाले नवयुवक जय बजरंग अखाड़ा साहू समाज समिति के खिलाड़ियों ने नगर के चौक चौराहों पर हेरतअंगेज करतब दिखाए जिसमें विशेष रूप से अखाड़े में शरिर पर से भारी बाइक उठाना, नुकीली कीलों पर लेटकर छाती पर से मोटर सायकल गुजारना, सिर पर टयूब लाईट फोड़ने, 1 क्विंटल का शरीर पर पत्थर रखकर फोड़ना, आग में से निकलना तलवार बाजी, लाठी भाला घुमाना, शरीर पर ट्यूबलाईट फोड़ना, भारी वाहन खीचना, टाइल्स फोड़ना, हाथो से नारियल फोड़ना, मुंह से आग निकालना, पट्टा शरीर पर से निकालना व अन्य अखाड़े के खिलाड़ियों ने अपनी कला का सार्वजनिक प्रदर्शन किया।

संचालनालय व कलेक्टर के आदेश के बाद भी नहीं बना मोक्षधाम

तूल पकड़ रहा है कामथ मोक्षधाम भूमि मामला, जनसुनवाई में पहुंचे कामथ के ग्रामीण

बैतूल/मुलताई। ग्राम पंचायत कामथ में मोक्ष धाम भूमि का मामला तूल पकड़ता जा रहा है जनप्रतिनिधि एवं ग्रामीणों ने जनसुनवाई में पहुंचकर आवेदन के माध्यम से मोक्ष धाम के लिए प्रस्तावित भूमि ग्रामीणों को उपलब्ध कराने की मांग की। ग्रामीणों का कहना है कि मोक्ष धाम उपलब्ध न होने के कारण लोगों को अपने परिजनों के शव को चार-चार किलोमीटर दूर ले जाना पड़ता है जिससे उन्हें कठिनाई का सामना करना पड़ता है। जिला कलेक्टर एवं म.प्र. पंचायत राज संचालनालय के आदेश के वर्षों बाद भी उन्हें मोक्ष धाम के लिए भूमि उपलब्ध नहीं हो पा रही है जिसको लेकर ग्रामीणों में रोष है। जिसको लेकर बड़ी संख्या में कामथ ग्राम पंचायत के ग्रामीण ने जनपद पंचायत कार्यालय में प्रति सप्ताह आयोजित होने वाली जनसुनवाई मेरा आवेदन सौप समस्या के समाधान की मांग की आवेदन में कहा गया है कि ग्राम पंचायत कामथ में मोक्षधाम की व्यवस्था नहीं है। अंतिम संस्कार हेतु नगर पालिका क्षेत्र मुलताई में 4 किलोमीटर की दूरी तय करके जाना पड़ता है जिससे ग्रामवासियों को अत्यधिक परेशानी का सामना करना पड़ता है। जबकि कामथ की जनसंख्या लगभग 5 हजार से 6 हजार है यहा मोक्षधाम होना अनिवार्य है किन्तु अभी तक मोक्षधाम निर्माण नहीं हो पाया है। उक्त मामले में जिला अध्यक्ष के राजस्व प्रकरण आदेश दिनांक 21/10/1994 के अनुसार खसरा नम्बर नया 142 पुराना 72 कुल रकबा 2.569 मद सड़क में से 0.081 हे. शमशान हेतु दी गई है म.प्र. पंचायत राज संचालनालय द्वारा जारी पत्र दिनांक 29/07/2024 के अनुसार मोक्षधाम प्राथमिकता के आधार पर बनाये जाने हेतु निर्देशित किया गया है। यहा मोक्षधाम बनने से ग्रामवासियो को नगरपालिका क्षेत्रों में लंबी दूरी तय करने की आवश्यकता नहीं होगी। किंतु इन आदेशों के बावजूद भी कामथ ग्राम पंचायत में मोक्ष धाम का निर्माण नहीं हो सका है। ज्ञापन सौंपने वालों में जीवन डोगरदिए, जीतू डहारे, मोनू सरदार, सजल शिवहरे ,राजकुमार मालवीय, राहुल पवार पंकज गीत आयुष लोखंडे अजय गोहिते, शंकर साकरे, नेहरू सरोदे, श्याम शिवहरे, महेश साहू आदि प्रमुख है।

इनका कहना

आवेदन प्राप्त हुआ है, वरिष्ठ अधिकारियों को भेजा रहा हैं साथ ही मामले की जांच कर शीघ्र आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

- धर्मपाल सिंह मसराम, कार्यपालन अधिकारी, जनपद पंचायत मुलताई

एसआईएफ के राष्ट्रीय अधिवेशन में बैतूल का प्रतिनिधित्व

झूठे केसों से पीड़ित पुरुषों की समस्याओं पर चर्चा

14वां राष्ट्रीय अधिवेशन में बैतूल के डॉ. गोहे का प्रेजेंटेशन रहा खास

पुरुष आयोग की मांग, झूठे केसों पर हुई चर्चा, भोपाल में होगा 2025 का आयोजन

बैतूल। सेव इंडियन फैमिली (एसआईएफ) का 14वां राष्ट्रीय अधिवेशन 15 से 17 अगस्त 2024 के बीच चंडीगढ़ में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस महत्वपूर्ण बैठक में बैतूल जिले का प्रतिनिधित्व डॉ. संदीप गोहे ने किया। एसआईएफ, भारत का एकमात्र ऐसा संगठन है जो पुरुषों के हितों के लिए कार्यरत है और देशभर में पीड़ित पुरुषों को हेल्पलाइन नंबर 8882498498 के माध्यम से नि:शुल्क परामर्श और सहायता प्रदान करता है।

इस अधिवेशन में देशभर से 40 संगठनों ने हिस्सा लिया और आगामी वर्ष 2025 के लिए कार्ययोजना तैयार की। इस योजना में प्रमुख रूप से पुरुष आयोग के गठन की मांग, मैरिटल रेप पर जनहित याचिका, और नए भारतीय न्याय संहिता के कुछ प्रावधानों में संशोधन के लिए आवश्यक कार्यवाही का लक्ष्य रखा गया। इन मुद्दों को लेकर व्यापक चर्चा हुई और एसआईएफ ने पुरुषों के अधिकारों और उनकी समस्याओं को अधिक प्रभावी ढंग से उठाने का संकल्प लिया। बैठक में डॉ. संदीप गोहे ने एक विशेष प्रेजेंटेशन दी, जिसमें उन्होंने दोहरे झूठे केसों में फंसे

पुरुषों और उनके परिवारों पर पड़ने वाले मानसिक, शारीरिक, आर्थिक और सामाजिक दुष्प्रभावों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि कैसे झूठे मामलों में फंसने से न केवल व्यक्ति बल्कि उसके पूरे परिवार को बदनामी, मानसिक तनाव और सामाजिक हीनता का सामना करना पड़ता है। इस स्थिति में परिवार के अन्य सदस्यों की शादी और करियर भी प्रभावित होते हैं, साथ ही माता-पिता पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। डॉ. गोहे ने इस प्रकार की समस्याओं से उबरने और मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के तरीकों पर भी जानकारी साझा की, जिससे पीड़ित परिवारों को मदद मिल सके।

एसआईएफ द्वारा जारी हेल्पलाइन पर आने वाली कॉल्स में ज्यादातर झूठे मामलों से संबंधित शिकायतें होती हैं, जिनमें घरेलू हिंसा और फेक केस शामिल हैं। संस्था 2005 से इन समस्याओं के समाधान में सक्रिय रूप से कार्य कर रही है और हजारों पीड़ितों को सहायता प्रदान कर चुकी है। इस अधिवेशन में भी इन मुद्दों पर गंभीरता से विचार किया गया और आने वाले समय में इन समस्याओं के समाधान के लिए ठोस कदम उठाने का संकल्प लिया गया। अधिवेशन के अंत में यह निर्णय लिया गया कि 2025 का अगला राष्ट्रीय अधिवेशन भोपाल में आयोजित किया जाएगा, जिसकी मेजबानी भाई वेलफेयर सोसाइटी एनजीओ को सौंपी गई है। सेव इंडियन फैमिली (एसआईएफ) पुरुषों की समस्याओं को हल करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है और इस दिशा में उनके प्रयास अत्यंत सराहनीय हैं।

पुण्य श्लोक महारानी अहिल्याबाई होल्कर

जयंती विशेष

शिवप्रकाश

लेखक भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री हैं।

पुण्यश्लोक महारानी अहिल्याबाई होल्कर की संपूर्ण देश 300वीं जन्म-जयंती मना रहा है। अनेक सामाजिक संस्थाएं एवं महिला संगठन उनके जयंती वर्ष में उनके अलग-अलग गुणों को प्रकट करने वाले कार्यक्रम एवं गोष्ठियों का आयोजन कर रहे हैं। अनेक सरकारें भी महारानी अहिल्याबाई के सुशासन, नगरीय विकास, रोजगारपरक उद्योग नीति जैसे विषयों पर संवाद आयोजित कर रही हैं। महारानी का जीवन एवं शासन शैली संवेदनशील, सादगी, सहजता, धर्मनिष्ठ, न्यायप्रिय एवं लोक कल्याणकारी थीं। इन्हीं गुणों के कारण उनकी प्रजा उन्हें सदैव लोकमाता के रूप में देखती थी। उनके अप्रतिम गुणों को देखकर ब्रिटिश इतिहासकार जॉन केयस ने उन्हें 'दार्शनिक रानी' (The Philosopher Queen) की उपाधि दी ।

अहिल्याबाई पिता मंकोजीराव शिंदे एवं माता सुशीलाबाई के परिवार में 31 मई 1725 को जन्मी थीं। उनका जन्मस्थान चौंडी (अहमदनगर, महाराष्ट्र) था, जो अब अहिल्यानगर के नाम से ही परिवर्तित हो गया है। धनगर जाति में जन्म लेने के बाद भी उनकी प्रतिभा को पहचानकर पेशवा बाजीराव एवं मल्हारराव होल्कर दोनों के परस्पर परामर्श के उपरान्त अहिल्याबाई का विवाह मल्हारराव ने अपने पुत्र खंडेराव के साथ संपन्न कराया। युद्ध में वीरगति प्राप्त होने के कारण उनको पति वियोग सहना पड़ा। अपने जीवन काल में उन्होंने श्वसुर मल्हार राव होल्कर, नवासे (पुत्री के पुत्र) एवं पुत्री सभी की असमय मृत्यु को देखा। इसी असहय वेदना को सहते- सहते वे स्वयं भी 70 वर्ष की उम्र में 1795 में संसार छोड़कर चली गई।

पति की मृत्यु के पश्चात अपने श्वसुर के आग्रह पर उन्होंने राजकाज सम्हालना प्रारंभ किया। उनका शासन प्रजावत्सल, न्यायप्रिय, सुशासन का प्रतीक था। अपनी धर्म के प्रति भक्ति के कारण उन्होंने अपनी राजधानी इंदौर से परिवर्तित कर पवित्र नदी नर्मदा के किनारे महेश्वर में स्थानांतरित की। उनका महेश्वर में राजधानी स्थानान्तरित करने का उद्देश्य था कि राज्य संचालन के साथ-साथ वह माँ नर्मदा की सेवा एवं आराधना कर सकें। माँ नर्मदा के किनारे उनका महल एक सर्वस्व त्यागी सन्यासिनी का महल था। जिसमें उन्होंने अपनी आयु के 28 वर्ष व्यतीत किए थे।

देश की सरकारें वर्तमान समय में अपनी आर्थिक नीतियों के केंद्र में समाज के जिस पिछड़े वर्ग के उत्थान एवं लघु उद्योग केंद्रित नीतियों का विचार करती हैं, आज से लगभग 300 वर्ष पूर्व महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने इस दूरदृष्टि का परिचय देते हुए 1745 में एक राजज्ञा द्वारा बुनकर, सुतार, कारीगरों से महेश्वर में निवास करने का आग्रह किया। आर्थिक विकास की दिशा में उनके द्वारा की गई अनेक पहल में से एक महेश्वर में निर्मित साड़ी आज भी संपूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है, जिसे महेश्वरी साड़ी के नाम से जाना जाता है। इस उद्योग को प्रोत्साहित करने के लिए वह स्वयं भी वहाँ निर्मित वस्त्र पहनती थी एवं देश- विदेश से आने वाले महानुभावों को भेंट स्वरूप इन्हीं वस्त्रों को प्रदान भी करती थीं। प्राकृतिक आपदा में किसानों का सहयोग, सेना के आवागमन से होने वाली फसलों की क्षतिपूर्ति की व्यवस्था भी उन्होंने की थी। आत्मनिर्भरता के साथ-साथ शिक्षा का केंद्र महेश्वर बने इसके लिए विद्वानों, धर्माचार्यों को बुलाकर संस्कृत पाठशाला प्रारंभ करने का कार्य भी उनके द्वारा हुआ।

मल्हारराव के युद्ध अभियानों पर जाने के उपरांत महारानी अहिल्याबाई राज्य का संचालन भी कुशलता के साथ करती थीं। पत्राचार के माध्यम से मल्हार राव को अपने राज्य के समाचार भेजना एवं प्रत्युत्तर में राज्य संचालन के लिए सुझाव लेना यह उनकी नियमित प्रक्रिया थी। सेवा एवं रसद सामग्री का प्रबंध, कर वसूली आदि की व्यवस्था बड़ी निपुणता के साथ उन्होंने की थी।

महारानी स्त्री होने के बाद भी न केवल राज्य संचालन में निपुण बल्कि एक कुशल योद्धा भी थीं। बचपन में ही सैन्य शिक्षा, घुड़सवारी, शस्त्र संचालन उन्होंने सीखा था। राघोवा के आक्रमण के समय अपने राज्य की रक्षा के लिए कूटनीति का परिचय देते हुए उन्होंने पुराने संबंधों के आधार पर सिंधिया, भोंसले, गायकवाड आदि का सहयोग माँगा। राघोवा को उचित दंड देने के लिए 500 महिलाओं की सैन्य टुकड़ी को प्रशिक्षित भी किया। राघोवा को उनके द्वारा लिखा पत्र आज भी उनकी कूटनीतिक दूरदर्शिता को प्रकट करता है, जिसमें उन्होंने लिखा कि 'आप मुझे अबला समझकर राज्य हड़पने के लिए यहां आए हैं लेकिन मेरी शक्ति आपको युद्ध क्षेत्र में ज्ञात होगी। मैं महिला सेना के साथ आपका मुकाबला करूंगी। यदि मैं युद्ध में पराजित हो गई तब मेरी हंसी और आपकी प्रशंसा कोई नहीं करेगा और यदि आप युद्ध में हार गए तो आप कहीं मुंह दिखाने लायक नहीं रहेंगे।' केवल राघोवा ही नहीं अपने राज्य की सीमाओं पर राजस्थान की ओर से मिलने वाली चुनौती का भी उन्होंने साहस के साथ सामना कर शत्रु को कुचलने का कार्य किया। सेना का संचालन, सैनिकों की चिकित्सा आदि भी उन्होंने कुशलता के साथ की। नाना फड़नवीस ने उनकी प्रशंसा करते हुए कहा था कि 'अब तक देवी अहिल्याबाई की धार्मिकता की प्रशंसा तो हम सुनते आए हैं मगर हम नहीं जानते थे कि वह बहादुर भी हैं अपने शत्रुओं के दांत खट्टे कर सकती हैं।'

महारानी अहिल्याबाई का शासन कठोर एवं न्यायप्रिय शासन था। उन्होंने जाति-पाति, ऊँच - नीच के भेदभाव से ऊपर उठकर चोरों के भय से जनता को मुक्ति प्रदान करने वाले नौजवान से अपनी पुत्री का विवाह किया। गरीब एवं कमजोर लोगों की सेवा में वह हमेशा तत्पर रहती थी। पति की मृत्यु के पश्चात् पति की संपत्ति पर पूर्ण अधिकार की व्यवस्था एवं स्त्री को दत्तक लेने का अधिकार देना यह उनके महिला सशक्तिकरण के उदाहरण हैं। उनके राज्य में रहने वाले भीलों (जनजाति) को अपराध मुक्त करने के लिए कृषि के औजार उपलब्ध कराकर सशक्त करने का कार्य उन्होंने किया। अपराध करने पर कठोर दंड एवं समस्याओं का त्वरित समाधान यह उनके शासन की विशेषता थी। पक्षपात रहित सभी को समान न्याय उनके शासन में था। इसके लिए अपने सेनापति के पुत्र को भी अपराध करने पर उन्होंने जेल में डलवा दिया था। प्रजा को न्याय दिलाने के लिए न्यायालय एवं न्यायाधीशों की नियुक्ति उन्होंने की थी। अपने राज्य कर्मचारियों के प्रति संवेदनशील एवं आत्मीयतापूर्ण व्यवहार, युद्ध में वीरगति पाने वाले सैनिक परिवारों के कल्याण की व्यवस्था को राज्य कोष से करने का प्रबंध उन्होंने किया था। अपने प्रति कठोर जीवन जीते हुए, प्रजा का पुत्र की तरह पालन, लोक कल्याण की योजनाएं एवं न्यायप्रियता के कारण उनको लोकमाता की उपाधि मिली।

राज्य संचालन में अनेक गुण होने के बाद भी उनका शासन मूलत: धर्म अधिष्ठित शासन था। जहां उनके व्यक्तिगत जीवन में सेवा, त्याग-तपस्या एवं दान का महत्व था वहीं उन्होंने मंदिरों के जीर्णोद्धार, उनकी स्थायी आर्थिक व्यवस्था, यात्रियों के लिए विश्राम स्थल एवं अन्न क्षेत्र स्थापित कराए। अपना राज्य भगवान शिव को समर्पित कर वह उनके प्रतिनिधि के रूप में शासन चलातीं थी। हिमालय में स्थित भगवान बद्रीनाथ, केदारनाथ, दक्षिण में रामेश्वरम, पश्चिम में द्वारिका से लेकर पूर्व में जगन्नाथ पुरी तक उनके द्वारा चलाएं सेवा कार्य आज भी प्रसिद्ध है। तीर्थ स्थानों पर गंगाजल भिजवाने की व्यवस्था देश को एक सूत्र में बांधती दिखाई देती है। काशी विश्वनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार सहित देश के लगभग समस्त तीर्थक्षेत्रों के विकास, हरिद्वार के गंगा घाटों सहित देश भर की नदियों के किनारे सैकड़ों स्थानों पर उन्होंने पक्के घाटों का निर्माण कराकर तीर्थ यात्रियों के लिए उचित स्नान की व्यवस्था करायी। समस्त अगणित धार्मिक कार्य वह अपने भाग में प्राप्त संपत्ति के द्वारा कराती थी। वह दीन- दुखी, गरीबों के लिए समर्पित निष्ठावान कर्मयोगी थी।

दक्षिण के प्रसिद्ध इतिहासकार रायबहादुर चिंतामणि विनायक वैद्य ने महारानी के संदर्भ में लिखा है कि वह लोकोत्तर स्त्री अपने अनेक गुणों के कारण महाराष्ट्र के लिए ही नहीं वरन् समूची मानवजाति के लिए भूषण रूप हुई है। इंदौर में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी अपने उद्बोधन में कहा था कि 'मैं देवी अहिल्याबाई को भी नमन करता हूं उनका पुण्य स्मरण करता हूं। देवी अहिल्याबाई ने शासन संचालन में छोटी-छोटी आवश्यकताओं को प्राथमिकता दी, उनके जीवन का एक-एक अध्याय इतना प्रेरक होता है कि आने वाली पीढ़ियों को उनसे सीख मिलती रहेगी। लोकमाता महारानी अहिल्याबाई के जीवन से प्रेरणा लेकर उनकी 300वीं जयंती के अवसर पर हम उनके दिखाये मार्ग का अनुसरण करते हुए एकात्म, समृद्ध, समरस एवं शक्तिशाली भारत का निर्माण करें तथा अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करते हुए विश्व कल्याण करने का संकल्प लें। महारानी अहिल्याबाई होल्कर को उनकी 300वीं जन्म-जयंती पर यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।'

भारत बंद को लेकर शहर में असमंजस, लोगों ने कहा बंद क्यों करें समझाओ कांग्रेस जैसे विपक्षी दलों में भी अलग-अलग राय, व्यापारी संगठनों की भी ना

आमला। 21 अगस्त को देशव्यापी एससी/एसटी संगठनों के बुलाए गए बंद को लेकर शहर में असमंजस के हालात है, अक्सर देखा गया है कि सरकार की किसी भी नीति नियम आदि के विरोध को लेकर कई बार बंद आदि का आयोजन किया जाता है, किंतु 21 अगस्त बुधवार को सुप्रीम कोर्ट के एक निर्णय के विरोध में कुछ संगठनों द्वारा बुलाए जा रहे बंद का खाका ज्यादातर लोगों के समझ ही नहीं आ रहा है, और शहर में चर्चा हो रही है कि आखिर बंद क्यों इसे कम से कम समझाया जाए, और बताया भी जाए।

बीते दो-चार दिनों से बंद का आह्वान कर रहे संगठनों को स्थानीय व्यापारी संघ ने भी ना कह दिया है, और साफ तौर पर कहा है कि स्थानीय व्यापारी संगठन बंद का समर्थन नहीं करेगा,इस बात का निर्णय मंगलवार को शहर के अलग-अलग व्यापारी संगठन द्वारा संयुक्त रूप से की गई एक बैठक के बाद किया गया है। यानी शहर का बाजार किसी भी तरह के बंद से किनारा करता नजर आ रहा है, जैसा कि इस मौके पर हमारी व्यापारी संगठनों और कई आम लोगों से भी चर्चा हुई तो सभी का मानना है कि बंद आखिर क्यों, और बंद से ही क्या सभी समस्याओं का हल निकाला जाएगा। वहीं इस मौके पर कुछ लोगों ने सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों का सम्मान करते हुए कहा है कि बंद का समर्थन यानी कानून की अवहेलना द्य तो वहीं ज्यादातर लोगों का कहना है कि बंद आखिर क्यों किया जा रहा है यह मामला ही हमारे समझ में नहीं आ रहा है, इसको लेकर भी ज्यादातर लोगों में भ्रम की स्थिति बनी हुई हैं।

व्यापारी संघ की सख्ती तो कांग्रेस जैसे विपक्षी दल में भी अलग-अलग राय- एससी एसटी संगठन द्वारा सुप्रीम कोर्ट के एक निर्णय आरक्षण में क्रीमी लेयर को लागू किए जाने के विरोध में बंद का आह्वान किया गया है, इस मौके पर शहर का समूचा बाजार और व्यापारी संगठनों ने भी पूरे मामले पर मंगलवार को एक बैठक का आयोजन कर बंद का आह्वान कर रहे संगठनों को ना कह दी है, व्यापारी संगठनों का कहना है कि बंद का समर्थन यानी माननीय सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों की अवहेलना है, इसलिए आमला व्यापारी संघ ने बन्द का समर्थन नहीं करने का ऐलान किया है। तो वहीं दूसरी ओर अक्सर ऐसे मौके पर प्रमुख विपक्षी राजनीतिक दल कांग्रेस में भी पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं की अलग-अलग राय है,यानी बंद को लेकर पूरे मन से कोई भी सामने आने को तैयार नहीं है, ऐसे में विभिन्न संगठनों का बंद शहर में कितना असर छोड़ पाएगा कहा नहीं जा सकता है।

आखिर हंगामा क्यों सुनिए जानकारों से- माननीय सुप्रीम कोर्ट के आरक्षण में क्रिमी लेयर लागू करने पर कुछ संगठनों के विरोध और भारत बंद के निर्णय और फिर स्थानीय बाजार की सुप्रीम कोर्ट के निर्णय की अवहेलना न करने की अपील के बाद हमने इस विषय पर कानून के जानकार जिले के प्रसिद्ध एडवोकेट पंडित राजेंद्र उपाध्याय से जब इस बारे में पूछा तो उन्होंने सबसे पहले तो कहा कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय शासन प्रशासन के लिए बंधनकारी है और इसका पालन सभी को करना चाहिए और यदि कोई इस निर्णय से असंतुष्ट है तो निर्णय के विरुद्ध में अपने संवैधानिक अधिकारों का उपयोग कर सकता है, आरक्षण में क्रीमीलेयर पर बोलते हुए पंडित उपाध्याय ने बताया कि हालांकि इसकी व्याख्या बहुत बड़ी है,फिर भी संक्षिप्त रूप में इसे जानें तो माननीय सुप्रीम कोर्ट का यही कहना है कि जिन्हें कई बार आरक्षण का लाभ दिया जा चुका है और उन्हें अब आरक्षण की आवश्यकता भी नहीं है, उनके हिस्से का आरक्षण इन्हीं समाज में दबे और पिछड़े लोगों को दिया जाए, जो प्रासंगिक भी है।

इनका कहना है

हम आरक्षण का समर्थन करते हैं और अभी भी आरक्षण की आवश्यकता है, किंतु आदिवासी समाज में अभी भी बड़ी संख्या में ऐसे हजारों लोग हैं,जिनका लाभ नहीं मिल पा रहा है हम ऐसे दबे कुचले लोगों के लिए क्रीमी लेयर का समर्थन करते हैं।

-जितेंद्र शर्मा सेवादल प्रभारी कांग्रेस आमला

शहर के सभी व्यापारी संघ की संयुक्त बैठक के बाद यह निर्णय लिया गया है,कि माननीय सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों का सम्मान करते हुए व्यापारी संगठन बंद का समर्थन नहीं करेंगे विरोध के कई अन्य विकल्प भी तलाशे जा सकते हैं।

-अनिल सोनी प्रगतिशील व्यापारिक संगठन अध्यक्ष आमला

हमारा संगठन कानून का समर्थन करते हुए बंद का समर्थन नहीं कर रहा है व्यवस्था बनाने के लिए पुलिस विभाग को भी कहा गया है।

-संजय साहू व्यापारी संघ अध्यक्ष मेंन रोड आमला

बिंजाना के युवा बने रक्तदान की मिसाल

एम.जी. हास्पिटल की टीम पहुंची बिंजाना

देवास। स्थानीय वार्ड क्र. 16 बिंजाना में प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी अपने मित्र स्व. रामगोपाल कुमावत की स्मृति में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें बिंजाना के युवाओं द्वारा बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया गया। महात्मा गांधी चिकित्सालय के ब्लड बैंक की टीम के अनूपसिंह डाबी, मुकेश चौधरी, रूखमणी गौर पहुंची। जहां उन्होंने लगभग 35 से 40 युवाओं का रक्त लिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर भाजपा नेता हाईकोर्ट एडव्होकेट मनोज श्रीवास्तव ने सभी युवाओं को रक्तदान का संकल्प दिलाया। आयोजक रामपाल कुमावत ने बताया कई युवा एसे है जिन्होंने तीस बार से अधिक रक्त दान किया है। इस अवसर पर भाजपा किसान मोर्चा मंडल अध्यक्ष लाखनसिंह दरबार, शेखरसिंह राठौर, धर्मेन्द्रसिंह राठौर, राहुल बाबा, प्रेमसिंह, मांगूसिंह, सुनील दरबार, कमल कुमावत, राहुल कुमावत, संजय कुमावत, विकास लाखा, रंजीत लाखा, संदीप कुमावत, जयसिंह राठौर, राधेश्याम कुमावत, अरविंद, कमलेश कुमावत आदि उपस्थित थे।

श्री श्री गौड़ ब्राह्मण समाज जागृति संगठन का श्रावणी उपाकर्म संपन्न

देवास। श्री श्री गौड़ ब्राह्मण समाज जागृति संगठन देवास का श्रावणी उपाकर्म कार्यक्रम शारदा गार्डन में वेद मूर्ति पंडित आशुतोष शुक्ल के अचार्ययत्व में संपन्न हुआ। पंडित शुक्ल ने सर्वप्रथम तीर्थ स्थान, पंच गव्य स्नान,हिमाद्रि स्नान संकल्प कर भगवान विष्णु एवं सप्त ऋषि का पूजन कर मंत्रोचार के साथ यज्ञोपवीत धारण करवाया एवं पितृ तर्पण हवन कार्य भी किया गया। हिमाद्रि कार्यक्रम में जागृति संगठन के अध्यक्ष वासुदेव शर्मा, उपाध्यक्ष प्रमोद तिवारी , लोकेंद्र व्यास, सुभाष पंड्या, आशुतोष दुबे,नीरज दुबे,संदीप जोशी, पपलेश जोशी , अनिल पंड्या, दिनेश जोशी , जीवनलाल शर्मा , योगेश जोशी , मनीष शर्मा , चंद्रशेखर पंड्या , राकेश पाठक , राहुल पाठक , उमाशंकर उपाध्याय , सुमित उपाध्याय , आदि बहुत संख्या में समाजजन उपस्थित थे।

सफाई मित्र बहनों ने महापौर को राखी बांधकर मनाया रक्षाबंधन पर्व

देवास। महापौर गीता अग्रवाल, विधायक एवं महापौर प्रतिनिधि दुर्गेश अग्रवाल ने निगम की सफाई मित्र बहनों के साथ मनाया रक्षाबंधन। 20 अगस्त मंगलवार को निगम की सफाई मित्र बहनों द्वारा महापौर कक्ष मे महापौर गीता अग्रवाल के साथ विधायक एवं महापौर प्रतिनिधि दुर्गेश अग्रवाल को राखी बांध कर मिठाई खिलाकर रक्षाबंधन पर्व मनाया। श्री अग्रवाल के द्वारा उपस्थित सभी सफाई मित्र बहनों को मिठाई तथा शगुन की राशि भेंट की तथा बहनों से अर्शिवाद लिया। इस अवसर पर निगम स्वास्थ्य अधिकारी जितेन्द्र सिसोदिया सहित स्वच्छता निरीक्षक, दरोगा व सफाई मित्र आदि उपस्थित रहे।

श्रीमती रेखा के मास क्षमण के उपलक्ष्य में निकली भव्य शोभा यात्रा

भव्य तप महोत्सव का हुआ आयोजन

तपस्या करने वाले से ज्यादा खाने वाले बीमार होते है : साध्वीजी

देवास। श्रीमती रेखा तेजकुमार चतुरमुथा के 31 उपवास मासक्षमण की कठोर तपस्या के उपलक्ष्य में भव्य तप महोत्सव का आयोजन हुआ। इस महामृत्युंजय तप के अंतर्गत आपने एक माह तक सिर्फ गर्म जल आधारित उपवास किया है। देवास नगर में चार्तुमास हेतु विराजमान साध्वीजी श्री शीलरेखा श्रीजी म.सा. एवं श्री शुभवर्धना श्रीजी म.सा. आदि की प्रेरणा एवं शुभ निश्रा में आपने यह तपश्चर्या पूर्ण की। तप महोत्सव के अंतर्गत आकर्षक शोभा यात्रा निकाली गई एवं प्रभु भक्ति के साथ तपस्वी सम्मान समारोह व विशाल धर्मसभा का आयोजन हुआ। शोभा यात्रा में तपस्वी बहन बग्गी पर सवार होकर अपने दोनों हाथों से विभिन्न वस्तुओं का वर्षीदान लुटाती चल रही थी। मानो कह रही हो कि संसार की सभी वस्तुएं असार है सिर्फ प्रभु द्वारा दर्शाया तपस्या भाव ही इस मानव जीवन की सार्थकता है। पार्श्व राजेन्द्र घोष सुंदर प्रस्तुति देते हुए चल रहा था। सिद्धचक्र विहार सेवा के साथी इंद्र बनकर प्रभुजी का रथ खींच रहे थे। प्रवक्ता विजय जैन ने बताया कि इस महान तप की पूर्णाहूति पर नवकारशी पश्चात श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ मंदिर से तपस्वी की भव्य एवं विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। अनेक आकर्षणों से सुसज्जित यह शोभा यात्रा श्री आदेश्वर मंदिर बड़ा बाजार होकर मंडी धर्मशाला पर विशाल धर्मसभा के रूप में संपन्न हुई। यहां पर पूज्य साध्वीजी के प्रवचन, गीत संगीतमय तपस्वी का सम्मान बहुमान एवं रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। इस अवसर पर साध्वीजी ने विशाल धर्म सभा को उपदेशित करते हुए कहा कि संसार में तपस्या करने वालों से ज्यादा खाने वाले बीमार होते हैं। तप के द्वारा ही अपने शरीर को तपाकर आत्मा पर जन्म जन्मांतर से लगे अशुभ कर्मो की निर्जरा संभव है। तपस्या से रोगों का नाश और गुणों का उत्थान होता है। असंभव को भी तप के द्वारा संभव किया जा सकता है। संपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन रखबचंद तेजकुमार गजेन्द्र कुमार निलेश चतुरमुथा परिवार द्वारा किया गया।

सत्ता का सर्कस

दिनेश गुप्ता

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

राहुल गांधी को पद के हिसाब से जगह देकर 'बड़े मन' के तो हो ही सकते थे?

देश के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा कही गई एक पंक्ति का जिक्र का अक्सर होता है-'छोटे मन से कोई बड़ा नहीं होता,टूटे मन से कोई खड़ा नहीं होता।'16 अगस्त को पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय वाजपेयी की पुण्यतिथि होती है। उनकी पुण्यतिथि पर भारतीय जनता पार्टी के कई नेताओं ने इस पंक्ति का उपयोग स्वर्गीय वाजपेयी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए किया। इसी के साथ सोशल मीडिया कांग्रेस नेता और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी का पंद्रह अगस्त के सरकारी समारोह का वो वीडियो भी चल रहा था, जिसमें वे पांचवी पंक्ति में बैठे हुए थे। कांग्रेस के नेताओं ने स्वतंत्रता दिवस समारोह की बैठक व्यवस्था पर केंद्र सरकार को निशाने पर लेते हुए कहा कि यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कुंठा को दिखाता है। देश में पंद्रह अगस्त पर स्वतंत्रता दिवस का मुख्य समारोह दिल्ली के लाल किले में होता है। इस कार्यक्रम में विदेशी मेहमानों के अलावा अति विशिष्ट व्यक्तियों को भी आमंत्रित किया जाता है। उनकी बैठक व्यवस्था पद प्रतिष्ठा के अनुसार होती है। लोकसभा और राज्यसभा में जो विपक्ष के नेता होते हैं,उन्हें भी मंत्रियों के समान हीं सम्मान और सत्कार दिए जाने की व्यवस्था सालों से प्रचलित है।

पिछले पांच साल में लोकसभा के भीतर कोई विपक्ष का नेता नहीं था। विपक्ष के नेता का पद उस राजनीतिक दल के निर्वाचित सदस्य को मिलता है जिसने चुनाव में सदन के सदस्यों की कुल संख्या में से दस प्रतिशत या उससे अधिक सीटें जीती हो। हाल ही में संपन्न हुए लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने 99 सीट जीतकर मुख्य विपक्षी दल के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। कांग्रेस संसदीय दल का नेता होने के कारण ही राहुल गांधी को प्रतिपक्ष का नेता भी घोषित किया गया है। नेता प्रतिपक्ष का पद कैबिनेट मंत्री के बराबर होता है। इस पद पर जो भी व्यक्ति होता है, वो संसद में सिर्फ विपक्ष की आवाज ही नहीं होता, बल्कि उसके कई विशेषाधिकार और शक्तियां भी होती हैं। विपक्ष का नेता पब्लिक अकाउंट, पब्लिक अंडरटेकिंग और एस्टिमेट पर बनी कमेटियों का हिस्सा होता है। साथ ही संयुक्त संसदीय समितियों और चयन समितियों में भी अहम भूमिका होती है। ये चयन समितियां सीबीआई, ईडी, केंद्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) और केंद्रीय सूचना आयोग (सीआईसी) जैसी एजेंसियों के प्रमुखों की नियुक्ति करती हैं।

दिल्ली में होने वाले स्वतंत्रता दिवस और इसी तरह के अन्य राष्ट्रीय कार्यक्रमों के आयोजन में बैठने की व्यवस्था का काम रक्षा मंत्रालय का होता है। हर कार्यक्रम में वरिष्ठता के आधार पर बैठक व्यवस्था की जाती है। वरिष्ठता का फैसला गृह मंत्रालय की 'टेबल ऑफ प्रेसेडेंस' लिस्ट के आधार पर किया जाता है। इसके आधार पर ही प्रोटोकॉल तय होता है और राजनेताओं, अधिकारियों की वरिष्ठता तय होती है। 'टेबल ऑफ प्रेसेडेंस' के अनुसार, केंद्रीय मंत्रियों और नेता प्रतिपक्ष को बराबर का दर्जा दिया गया है। राहुल गांधी के पांचवी पंक्ति में बैठने के बाद उपजे विवाद पर रक्षा मंत्रालय ने सफाई देते हुए बताया कि लाल किले में होने वाले स्वतंत्रता दिवस समारोह की सारी जिम्मेदारी रक्षा मंत्रालय की होती है। रक्षा मंत्रालय की ओर से आई सफाई में कहा गया कि आगे की पंक्तियों में ओलंपिक मेडल विजेताओं के बैठने का इंतजाम किया गया था, इसलिए राहुल गांधी को पीछे बैठाया गया। प्रोटोकॉल के मुताबिक, विपक्ष के नेता को आगे की पंक्ति में बैठाया जाता है। वहीं, राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे को भी पांचवीं पंक्ति में जगह दी गई थी। हालांकि, खड़गे आए नहीं थे। रक्षा मंत्रालय की यह सफाई तार्किक रूप से भी सही नहीं मानी जा सकती।

स्वतंत्रता दिवस का समारोह कोई पुरस्कार वितरण का समारोह नहीं था, जहां बैठक व्यवस्था उसके अनुरूप की जाए। यह एक राष्ट्रीय समारोह है और इस तरह के समारोह में व्यक्ति की पद और प्रतिष्ठा महत्वपूर्ण होती है।

सरकार ने इसमें शायद जानबूझकर बदलाव किया है। यह बदलाव इस बात की ओर भी इशारा करता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, कांग्रेस नेता राहुल गांधी को प्रतिपक्ष का नेता होना स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं।लोकसभा के भीतर भी प्रतिपक्ष के नेता की अनेदखी के कई दृश्य पहले भी सामने आ चुके हैं। लाल किले की घटना के बाद लगता है कि मोदी और राहुल गांधी के बीच टकराव आगे और बढ़ सकता है।

भाजपा नेता और पूर्व राज्यसभा सांसद सुब्रह्मण्यम स्वामी ने दिल्ली हाई कोर्ट में याचिका दायर करते हुए नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी की भारतीय नागरिकता रद्द करने की मांग उठाई है। उन्होंने राहुल की नागरिकता रद्द करने के लिए गृह मंत्रालय को निर्देश दिए जाने की मांग की है। स्वामी की याचिका पर दिल्ली उच्च न्यायालय में अगले हफ्ते सुनवाई हो सकती है। सुब्रह्मण्यम स्वामी ने याचिका में कहा है कि उन्होंने कांग्रेस सांसद की नागरिकता को लेकर गृह मंत्रालय को पांच साल पहले शिकायत दी थी लेकिन गृह मंत्रालय ने पांच साल में ये साफ नहीं किया कि इस मसले पर उसने क्या फैसला लिया है या कार्रवाई की है? सुब्रमण्यम स्वामी ने भारतीय संविधान के अनुच्छेद 9 का जिक्र करते हुए कहा था कि इसके मुताबिक राहुल गांधी किसी एक देश के ही नागरिक हो सकते हैं। स्वामी ने कहा था कि यदि कोई नागरिक दूसरे देश की नागरिकता लेता है तो फिर उसे भारत की नागरिकता छोड़नी होगी। केंद्र सरकार की ओर से इस मामले में राहुल गांधी को अप्रैल 2019 को एक नोटिस भी भेजा गया था। स्वामी ने अब अदालत से मांग की है कि वह सरकार से इस मुद्दे पर कार्रवाई का स्टेटस पूछे। स्वामी की इस याचिका से पहले भी राहुल गांधी की नागरिकता को लेकर एक-दो याचिकाएं विभिन्न अदालतों में लग चुकी हैं। जुलाई में ही लखनऊ उच्च न्यायालय ने एक भाजपा कार्यकर्ता की याचिका को तथ्य न होने के कारण खारिज कर दिया था। 2019 में सुप्रीम कोर्ट भी राहुल गांधी की नागरिकता को लेकर दाखिल याचिका को खारिज कर चुका है। याचिका में कहा गया था कि राहुल की नागरिकता के मामले पर गृह मंत्रालय को जल्द जांच के निर्देश दिए जाएं। तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई ने कहा था कि अगर कोई कंपनी किसी फॉर्म में राहुल गांधी को ब्रिटिश नागरिक बताती है तो इसका मतलब यह नहीं कि वे ब्रिटिश हो गए।

राहुल गांधी की नागरिकता को लेकर गृह मंत्रालय में पूर्व राज्यसभा सांसद सुब्रह्मण्यम स्वामी ने ही एक शिकायत की थी। इस शिकायत के कारण ही उनकी नागरिकता संबंधी मामला बार बार उठता रहा है। भाजपा के राज्यसभा सांसद सुब्रमण्यम स्वामी ने शिकायत में कहा था कि राहुल यूके में रजिस्टर्ड बैकऑप्स लिमिटेड नाम की कंपनी के निदेशक और सचिव पद पर रहे हैं। कंपनी के 10 अक्टूबर 2005 से 31 अक्टूबर 2006 तक के सालाना रिटर्न में राहुल की राष्ट्रीयता ब्रिटिश और जन्मतिथि 19 जून 1970 बताई। सुब्रमण्यम की शिकायत पर गृह मंत्रालय ने अप्रैल में राहुल के खिलाफ एक नोटिस जारी किया था। राहुल को ब्रिटिश नागरिक होने के आरोपों पर 15 दिन के अंदर जवाब देने को कहा था। नागरिकता के बारे में सूचना के अधिकार के तहत पेश किए गए आवेदनों को गृह मंत्रालय खारिज कर चुका है। में मंत्रालय ने कहा कि आरटीआई अधिनियम की धारा 8 (1) (एच) और (जे) के तहत कोई खुलासा नहीं किया जा सकता। जानकारी देने से जांच प्रक्रिया में बाधा पहुंचेगी। अब पूर्व राज्यसभा सांसद सुब्रह्मण्यम स्वामी अपनी शिकायत का स्टेटस जानने के बहाने इस मामले को अदालत तक लेकर पहुंचे हैं।

राहुल गांधी पांचवी कतार में थे और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लाल किले की प्राचीर स्वतंत्रता दिवस पर देश को संबोधित कर रहे थे। दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में यह चर्चा आम होती है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को राहुल गांधी फूटी आंख भी नहीं सुहाते। वे 2014 से ही लगातार राहुल गांधी पर हमलावर रहते आए हैं। राहुल गांधी भी उन्हें उद्योगपति गौतम अडानी और मुकेश अंबानी के जरिए प्रधानमंत्री मोदी की निष्ठा पर सवाल उठाने से पीछे नहीं हटते। लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री मोदी ने परिवारवाद के मुद्दे को खूब हवा दी। इसके बाद भी महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में वे विरासत के आधार पर चल रहे राजनीतिक दलों को किनारे नहीं लगा पाए। लाल किले की प्राचीर से भी प्रधानमंत्री मोदी ने परिवार के जरिए ही एक बार फिर राहुल गांधी को निशाने पर लिया। लेकिन,इस बार संदेश कुछ अलग तरीके से दिया गया था। प्रधानमंत्री ने कहा कि- 'परिवारवाद और जातिवाद भारत के लोकतंत्र को बहुत नुकसान कर रहा है। देश की राजनीति को हमें इससे मुक्ति दिलानी होगी। नए मिशन के तहत हम जल्द से जल्द देश में, राजनीतिक जीवन में जनप्रतिनिधि के रूप में एक लाख ऐसे नौजवानों को आगे लाना चाहते हैं जिनके परिवार में किसी का भी कोई राजनीतिक बैकग्राउंड ना हो। जिसके माता-पिता, भाई-बहन, चाचा-मामा कभी राजनीति में ना रहे हों। किसी भी पीढ़ी में ना रहे हों। ऐसे होनहार नौजवानों को आगे लाया जाएगा। ये फ्रेश ब्लड होगा। वो एक लाख नौजवान चाहे वो पंचायत में आएं, चाहे नगर पालिका में आएं,चाहे जिला परिषदों में आएं। चाहे विधानसभा-लोकसभा में आएं। बस उनका कोई भी पहले का राजनीतिक इतिहास ना हो। ऐसे फ्रेश लोग राजनीति में आएं। ताकि जातिवाद से मुक्ति मिले और लोकतंत्र को समृद्धि मिले। ये भी जरूरी नहीं कि वो एक ही दल में जाएं। उनको जो दल पसंद हो उस दल में जाएं। और जन प्रतिनिधि बनकर आगे आएं।' प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब भी परिवारवाद की बात करते हैं तब उन राजनीतिक दलों की सूची चर्चा में आई जाती है जो राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के सदस्य हैं। उत्तर प्रदेश और बिहार की राजनीति में ऐसे कई दल हैं। अपना दल भी है और लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) भी है। महाराष्ट्र में अजित पवार भी परिवारवाद की राजनीति से ही शिखर पर पहुंचे हैं। भाजपा या प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जिन्हें परिवारवादी पार्टी कहते हैं,उन्हें खड़ा करने में परिवार की ही भूमिका पीछे दिखाई देती है। शरद पवार ने कांग्रेस से अलग होकर एनसीपी को ताकतवर पार्टी अपने राजनीतिक प्रभाव के कारण बनाया। यही स्थिति लालू यादव और मुलायम सिंह यादव की रही है। भारतीय जनता पार्टी ने परिवारवाद का मुद्दा उठाकर एनसीपी, शिवसेना और लोक जनशक्ति पार्टी को भी तोड़ा। दिलचस्प यह है कि इसके बाद भी भाजपा इन राजनीतिक दलों के प्रतिबद्ध वोटर को अपने पक्ष में नहीं लगा सकी। बिहार में चिराग पासवान की पार्टी ने अपने हिस्से की सभी पांच सीटें जीतकर सभी को चौंका दिया। मौजूदा हालात में चाचा पशुपति पारस अलग-थलग पड़ गए हैं। वे चिराग पासवान से समझौता करने की कोशिश में लगे हुए हैं। इधर,महाराष्ट्र अजित पवार के बयान भी घर में एका लाने के उत्सुक लग रहे हैं।

राजनीति के बुनियाद में है परिवार

हिमाचल प्रदेश राजनीति में दो राजनीतिक परिवारों का दबदबा दशकों से चला आ रहा है। पहला -राजा वीरभद्र सिंह का परिवार, उनकी पत्नी प्रतिभा सिंह और बेटे विक्रमादित्य। वीरभद्र की कांग्रेसी राजनीति को आगे बढ़ा रहे हैं। दूसरी धूमल परिवार है। प्रेम कुमार धूमल हिमाचल के मुख्यमंत्री रहे। बेटा अनुराग ठाकुर सांसद है। केंद्रीय मंत्री भी रहा। पंजाब में भी परिवारवादी राजनीति है। पहला परिवार प्रकाश सिंह बादल का है। प्रकाश सिंह बादल कई बार पंजाब के मुख्यमंत्री रहे। उनकी राजनीतिक विरासत को उनके बेटे सुखबीर बादल ने आगे बढ़ाया। सुखबीर बादल पंजाब के उप मुख्यमंत्री रहे। सुखबीर बादल की पत्नी हरसिमरत कौर बादल मोदी सरकार में मंत्री भी रहीं। दूसरा परिवार है कैप्टन अमरिंदर सिंह का, जिनकी पत्नी और बेटी राजनीति में हैं। हरियाणा की राजनीति में चौटाला, हुड्डा और बिश्नोई फैमिली का राजनीतिक दबदबा है। इसे लालों के लाल की राजनीति कहते हैं।

बिहार में पासवान, झारखंड में सोरेन परिवार में फूट

उत्तर प्रदेश में कई राजनीतिक परिवार हैं। पहला- मुलायम सिंह यादव का परिवार। परिवार की तीसरी पीढ़ी राजनीति में एंट्री कर चुकी है। दूसरा चौधरी चरण सिंह का परिवार, जिसकी तीसरी पीढ़ी यानी जयंत चौधरी सियासी विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। तीसरा परिवार संजय निषाद का है। बेटा प्रवीण निषाद पिता की राजनीतिक विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। चौथा परिवार ओम प्रकाश राजभर का है। इसके अलावा और कई परिवार हैं जिसमें सोनेलाल पटेल का भी परिवार शामिल है, जिनकी बेटी केंद्र सरकार में मंत्री हैं। मायावती के भतीजे भी पार्टी संभाल रहे हैं। उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह यादव की छोटी बहू अपर्णा यादव के जरिए भाजपा ने इस ताकतवर यादव परिवार को राजनीतिक तौर पर कमजोर करने की कोशिश की है। लेकिन, लोकसभा चुनाव के नतीजे विपरीत आए। बिहार की राजनीति में तीन परिवारों का दबदबा है। पहला है लालू प्रसाद यादव का परिवार। लालू यादव के दो बेटे और 2 ही बेटियां उनकी राजनीतिक पारी को आगे बढ़ा रही हैं। पत्नी राबड़ी देवी भी मुख्यमंत्री रह चुकी हैं। इस परिवार में भी भाजपा सेंध लगा चुकी है। दूसरा राम विलास पासवान का परिवार है। बेटा चिराग पासवान पिता की राजनीतिक विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। तीसरा है जीतन राम मांझी का परिवार। बेटा संतोष मांझी पिता के राजनीति को आगे बढ़ा रहे हैं। झारखंड में सोरेन फैमिली का दबदबा है। पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के बेटे हेमंत सोरेन पिता की सियासी विरासत को संभाले हैं। यहां भी भाजपा ने सोरेन परिवार में सेंध लगाते हुए सीता सोरेन को अपने साथ कर लिया। ओडिशा में पटनायक फैमिली का सियासी दबदबा है। बीजू पटनायक मुख्यमंत्री थे। फिर बेटे नवीन पटनायक ने पिता की राजनीति को आगे बढ़ाया और वह भी मुख्यमंत्री बने। कर्नाटक में देवेगौड़ा फैमिली का राजनीतिक दबदबा है। देवगौड़ा प्रधानमंत्री रहे। उनके बेटे एचडी कुमार स्वामी मुख्यमंत्री भी रह चुके हैं। केंद्र में मंत्री हैं। तमिलनाडु की बात करें तो एम करुणानिधि मुख्यमंत्री रहे और अब उनके बेटे एमके स्टालिन सत्ता में हैं। स्टालिन के बेटे उदयनिधि स्टालिन भी राज्य सरकार में मंत्री हैं।

महाराष्ट्र में म.प्र. के चार बच्चों की मौत

तालाब में नहाने के दौरान डूबे ; चारों आपस में थे सगे भाई-बहन

सेंधवा (नप्र)। महाराष्ट्र के तालाब में डूबने से मध्य प्रदेश के चार के बच्चों की मौत हो गई। चारों आपस में सगे भाई-बहन हैं। घटना सोमवार दोपहर को महाराष्ट्र के चालीस गांव ग्रामीण थाना अंतर्गत पिंपरखेड़ गांव की बताई जा रही है।

ग्रामीणों से मिली जानकारी के अनुसार बड़वानी जिले के वरला थाना क्षेत्र के दुगानी के रामजी फलिया निवासी आदिवासी किसान सुभान्या आर्य परिवार के साथ मजदूरी करने जलगांव जिले के पिंपरखेड गांव गया हुआ था। सुभाष आर्य पत्नी सीमा के साथ अपने 6 बच्चों को लेकर मजदूरी करने साथ ले गया था। परिवार में पांच लड़की और एक लड़का था। सोमवार को सुभाष और उसकी पत्नी खेत में काम कर रहे थे। खेत से कुछ दूर बने तालाब में बच्चे नहाने गए थे। सुभाष आर्य बच्चों को तालाब से दूर कर खेत में मजदूरी करने के लिए चला गया था। कुछ देर बाद बच्चे फिर तालाब में नहाने चले गए थे।

इन चारों की हुई मौत- नहाने के दौरान चारों बच्चों की डूबने से मौत हो गई। चारों बच्चों में तीन लड़की और एक लड़का था। मृतकों में 9 वर्षीय रोशनी, 7 वर्षीय शिवांजलि, 5 वर्षीय आराध्या, 3 वर्षीय आर्यन पिता सुभाष आर्य शामिल है। फिलहाल चालीसगांव ग्रामीण थाना पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू करी है। चारों बच्चों का सोमवार देर शाम को अंतिम संस्कार कर दिया गया। दो बच्चियां संजना (12 वर्ष) और डेढ़ वर्षीय बालिका जीवित बची है। चोर बच्चों को खोने के बाद गांव में सन्नाटा पसरा है तो वहीं परिजन भी सदमे में हैं।

फसल बोवनी के लिए आता है परिवार- ग्राम पंचायत दुगानी के सरपंच अशोक आर्य ने बताया कि पीड़ित परिवार मजदूरी के लिए अक्सर महाराष्ट्र में ही रहता था। पीड़ित परिवार की कुछ खेती भी गांव में है। परिवार फसल बोवनी के समय आते हैं। फिर मजदूरी के लिए महाराष्ट्र लौट जाते हैं।

भर्ती प्रक्रिया समय-सीमा में पूर्ण करें : उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग में विभिन्न पदों की भर्ती कार्यवाही की समीक्षा की

भोपाल(नप्र)। उप-मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने मंत्रालय वल्लभ भवन में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग में मैनपावर उपब्धता के संबंध में की जा रही कार्यवाही और अद्यतन स्थिति की समीक्षा की। उन्होंने चिकित्सक, विशेषज्ञ, सहायक चिकित्सकीय एवं प्रशासनिक स्टाफ की भर्ती के लिए सभी आवश्यक कार्यवाहियों को समय-सीमा में पूर्ण करने के निर्देश दिये। उल्लेखनीय है कि लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग में विशेषज्ञों की सीधी भर्ती के लिए प्राथमिकता के आधार पर प्रथम श्रेणी के 1085 पदों के लिए लोक सेवा आयोग द्वारा विज्ञप्ति जारी की जा चुकी है। द्वितीय श्रेणी के पदों में 895 चिकित्सा अधिकारी के पदों के लिए विज्ञप्ति जारी हो चुकी हैं। कुल 1373 द्वितीय श्रेणी के पदों में भर्ती की कार्रवाई प्रक्रियाधीन है। बैठक में संचालक स्वास्थ्य श्री दिनेश श्रीवास्तव सहित विभागीय वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

परिवहन विभाग में लर्निंग ड्रायविंग लायसेंस से संबंधित सेवाएं फेसलेस

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में लर्निंग ड्रायविंग लाइसेंस से संबंधित अधिकांश सेवाएं फेसलेस प्रक्रिया के तहत प्रारंभ की गई है। अब इन सेवाओं का लाभ उठाने के लिये आवेदक को परिवहन कार्यालयों में आने की आवश्यकता नहीं है। आवेदक ऑनलाइन आवेदन कर तथा निर्धारित प्रक्रिया को पूर्ण कर अपना लर्निंग लायसेंस प्राप्त कर सकता है।

प्रदूषण नियंत्रण प्रमाण-पत्र की सुविधा

वाहनों से उत्सर्जित होने वाली हानिकारक गैसों से होने वाले प्रदूषण के कारण पर्यावरण को होने वाले नुकसान से बचाने एवं पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से प्रदूषण जांच केन्द्र संचालित किये जा रहे हैं। प्रदेश में प्रदूषण नियंत्रण प्रमाण-पत्र वाहन पोर्टल पर इंटिग्रेट किया जाकर ऑनलाइन जारी किये जा रहे हैं। प्रारंभ में इस व्यवस्था को भोपाल जिले में पायलट प्रोजेक्ट के रूप में सफलतापूर्वक पूर्ण किया गया। इस व्यवस्था को अब परिवहन विभाग द्वारा पूरे प्रदेश में लागू किया जा रहा है।

वाहनों मे मानव हस्तक्षेप रहित पारदर्शी तरीके से फिटनेस जांच किये जाने हेतु विगत 6 माह में प्रदेश में ग्वालियर, इंदौर एवं जबलपुर में आटोमेटड टेस्टिंग स्टेशन (ए.टी.एस.) स्टेशन स्थापित हो गये है, जिन्हें विभाग द्वारा पंजीयन प्रमाण-पत्र जारी किये गये हैं। 8 ए.टी.एस. के निर्माण के लिये प्राथमिक पंजीयन प्रमाण-पत्र जारी किया गया है तथा एक अन्य ए.टी.एस. के निर्माण के लिये पूर्व में ही प्राथमिक पंजीयन प्रमाण-पत्र जारी किया जा चुका है।

परिवहन विभाग ने जन-सामान्य को विभाग से जुड़ी लोक सेवा को पहुंचाने के मकसद से विभाग की 31 आवश्यक सेवाओं को लोक सेवा गारंटी अधिनियम 2010 के अंतर्गत लिया है। इसके साथ ही विभाग की 7 सेवाएं 'समाधान एक दिवस' योजना के अंतर्गत शामिल की गई हैं।

ट्रक में घुसा श्रद्धालुओं का ऑटो, 7 की मौत

मृतकों में एक साल की बच्ची शामिल, 6 घायल; यूपी से बागेश्वर धाम जा रहे थे

छतरपुर (नप्र)। छतरपुर में श्रद्धालुओं से भरा ऑटो ट्रक में जा घुसा। हादसे में 7 लोगों की मौत हो गई। 6 घायल हैं। 4 की हालत गंभीर है, जिन्हें ग्वालियर रेफर किया गया है। बाकी दो का इलाज छतरपुर जिला अस्पताल में चल रहा है।

एक्सीडेंट कदारी के पास नेशनल हाईवे-39 पर मंगलवार सुबह करीब 5 बजे हुआ। मृतकों में बुजुर्ग और एक साल की बच्ची शामिल हैं। सिविल लाइन थाना प्रभारी वाल्मिक चौबे ने बताया कि उत्तर प्रदेश के महोबा रेलवे स्टेशन से 13 श्रद्धालु ऑटो से बागेश्वर धाम जा रहे थे। इसी दौरान ड्राइवर को झपकी आ गई और ऑटो ट्रक से जा टकराया।

छतरपुर एसपी अगम जैन ने बताया कि पांच लोगों की घटनास्थल पर मौत हो गई थी, दो ने अस्पताल में दम तोड़ा। सभी श्रद्धालु उत्तर प्रदेश के रहने वाले हैं। ऑटो में क्षमता से ज्यादा लोग सवार थे। ड्राइवर को नींद का झोंका आने से हादसा हुआ।

मां को नहीं पता बेटी और पति की मौत हो गई

हादसे में डेढ़ साल की अंशिका और उसके पिता जनार्दन की भी मौत हुई है। लेकिन मासूम की मां संगीता यादव को इस बारे में नहीं बताया गया है। संगीता ने बताया, हम लखनऊ के रहने वाले हैं। बेटी अंशिका के मुंडन के लिए बालाजी (बागेश्वर धाम) जा रहे थे। साथ में पति और तीन बेटियां थीं। बेटी के मुंडन से पहले हादसा हो गया। दो बेटियां यहीं हैं, लेकिन छोटी बेटी और पति नहीं दिख रहे हैं।

छतरपुर जिले अंतर्गत खजुराहो-झांसी हाइवे पर महोबा रेलवे स्टेशन से बागेश्वर धाम जाते समय हुई सड़क दुर्घटना में ऑटो में सवार उत्तरप्रदेश के सात लोगों की असामयिक मृत्यु एवं छः लोगों के घायल होने का समाचार अत्यंत पीड़ादायक है। मृतकों की पहचान एवं परिजनों से संपर्क हेतु उ. प्र सरकार से संपर्क में है। गंभीर घायलों को ग्वालियर रेफर किया गया है। घायलों के समुचित इलाज के लिए जिला प्रशासन को निर्देशित किया गया है। बाबा महाकाल से दिवंगतों की पुण्यात्माओं को अपने श्रीचरणों में स्थान देने और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हूँ। दुःख की इस घड़ी में हम सभी शोकाकुल परिवारों के साथ हैं।